[illegible] DEPARTMENT

THE

CIVIL SERVICE REGULATIONS

RELATING TO

SALARY, LEAVE, PENSION AND TRAVELLING ALLOWANCE

Fifth Edition (Reprint) corrected up to 15th January 1915

CALCUTTA
SUPERINTENDENT GOVERNMENT PRINTING, INDIA
1915

Price Annas Twelve or One Shilling Two Pence

AYZ=2-2

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ [illegible]
य ॥ [illegible]
[illegible] विवेक [illegible] ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] संकल्पेति [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

3

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

8

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

सू:

10

[illegible]
[illegible] यत्रैवं तत्रैवं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] इति [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

12

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ७ ॥ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ०० ॥ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

14

यत्तत्त्रिमिमि धर्जधिते वैधयिके भाय माज
येनास्त्र उभय वा नमत्तुमते तत्त्वं उपयतूति
प्रकाशतुभूह मभुवत्त्रवभितिपारिजगते
मतङति। यते कनाकनपमायेवपिमिंधेमि
मतःकाशमत्त्वैभिधामानमते कनेपि
भूतेति मकमपि मकतानभूतीतकवति ॥ ०० ॥
मते इवनमतमुथङत्वनमत्त्ववत। कने
भूकनंकनमुमुतिरत्त्वेनयुक्तते ॥ ०३ ॥
नवेकमुयणमत्त्वनाकनेनयुक्तते। उक्तम
इकिमिमनयत्त्वंमम मुमनकमयपतिगपि
उक्तवानुभु उक्तम। मतेमवनङति। मते
मुंवमयाकनांवनः मुमगमुमुमतेति
भूतीति मतेमवनमतम्ः ममभिमङत्त्व
तितम उम्रुमुयनं उक्कम्कं पकनं उक्तम
मोमनिदमगजिमुमुमधितुतंममनेपिमाम
त्तेनमिमधतः मयंमहुइवनिगिति उम

स्त्री
पं॰ म॰
7

15

नमः श्रुणपि अनेनोक्तं अथवा इत्यतः द्वितीयं
सूत्रं। अनन्तरं। अनेनोक्तं भिन्नतमद्
श्रुतपरनीयं अनन्तकालस्य श्रुतिवरु
ववश्च मलनवलन अनेनोक्तं ममतद्
ः श्रुतीतवपिविमध्यकरो ७ श्रुतीतिःयद
त उपयतुतः इत्यतः ॥ ७ ॥ ॥ श्रुतिवरुमि
अतीतिवपनान्तवमुनि। इनिरस्यविनद्
श्रुत्वैवद्वमनमसूत्र ॥ ७ ॥ ॥ केमो
श्रुतिवरुःइतश्रज। श्रुतिवरुःइति। मस्ति
अतीतिवपनान्तवमुनि मस्तिविमुत्र अ
तिश्रुतमत उत्तुवंश्रुतं हृवजमन्वतीति
हृवजनं उत्तरत्रसमेति उमाउश्चिन
इतिचेत्तं हृवजनं निरस्यनिमाजत विनद्
श्रुतामि नअतीतिवंतुयस्य उस्य हृवजनस्य
श्रुतं श्रुतिवरुउत्तरत ॥ ७ ॥ ॥
उत्तरःत्रुःममनाति जनःपरहस्वाति सूत्रं।

16

[illegible] ॥ ०४ ॥
[illegible]
[illegible] यति। [illegible]ति। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] विपरीत [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ०४ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ०५ ॥ ॥
[illegible]
[illegible] यति। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्री.
पं. सं.
३

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

48

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ईश्वरस्य । अस्मद्गुरोर्भगवत शिवईश्व
रस्य । श्रीवः पूज्यः पूज्यविनामिषु
सद्गुरुवत्पादप्रभपूज्यः पूज्यावपूज्यः
पदत्रामकः प्रतिहतः ॥ ०१ ॥ ॥
इमः श्रीगणेशः प्रतिगण्यसुत्रस्थ्य, वि
यत्नवत्तेत्नि श्रुतिवेदनि लाञ्छिते ॥ ०३ ॥ ॥
त्रिभूभुं भक्ष्मर्गतत्पादेनं श्रीवंसत्
सूर्यदिः, उत्तममानं मिभिभुमाग ।
इमः श्रीगणेशति, उत्तमण्यतपंभू
स्तंभंगण्य भावतः पभवाक्षरभिहुय,
इमः श्रीगणेशत्ते प्रभिमुल पूज्यानयः पूज्यैः,
प्रचेतयाः उपाध्यक्ष कलकुत्तयाः भक
मत । वंस्य पूज्य वंसम्य मिमाभि यतु
लगधिपुभुस्य यंपा प्रचक भल
नेशस्तुभय निभिवकलकुतय भियम
नीनिभविदस्तानि पक्षकुत नि लाञ्छिते,

20

सत्त्वगुणात् उत्पन्नो ऽहंकारः ॥ ८ ॥ ॥

अहंकारः पञ्चतन्मात्राणि बुद्धीन्द्रियपञ्चकम्

मनश्चेति षोडशको गणः [illegible] उच्यते ॥ ८ ॥

तत्र [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] बुद्धीन्द्रिय [illegible] । अहंकारो [illegible]

[illegible] तन्मात्रं प्रकृतिः अहंकारः [illegible]

[illegible] [illegible] षोडशको गणः [illegible]

जातं बुद्धीन्द्रियपञ्चकं बुद्धीन्द्रियाणि [illegible]

पञ्चकं [illegible] उच्यते । [illegible] अहंकार

[illegible] बुद्धीन्द्रियं उच्यते [illegible] ॥ ९ ॥ ॥

अहंकारात् [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] । [illegible]

[illegible] [illegible] ॥ १० ॥

अहंकारात् [illegible] [illegible]

य [illegible] [illegible] । [illegible] ।

[illegible] अहंकारः [illegible]

स्री. पं. स. ०

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १० ॥ १० ॥ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १७ ॥ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ १८ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

24

[illegible] लिङ्गमयी [illegible]
[illegible] किं [illegible]
[illegible]
भवति, [illegible] ॥ ३३ ॥ ॥
शम्भु [illegible]
[illegible] ॥ ३४ ॥
[illegible] शम्भु [illegible]
[illegible]। शम्भुरिति। [illegible]
[illegible] लिङ्गमयी [illegible]
[illegible]
[illegible] भवति [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३५ ॥ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ३६ ॥
सू॰ पं॰ म॰ ०४ एवं लिङ्गमयीं [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सम्युतापिडीयंमेः सम्यग्युक्ता पिडीयं मण्डलं
मण्डलंयुक्तान्यंयेपिडीयः युक्तेन्गः ज्ञात
[illegible] युक्तयुक्तम [illegible] मण्डलंमण्डलं
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] कण्ठयति ॥ १२ ॥ ॥
[illegible] [illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥
एवंपद्मीकालम [illegible]
[illegible] यति । [illegible] ति । [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] मण्डलेकः [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] एवंयुक्तमर्ग [illegible]

श्री.
पं. सं.
०३

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १४ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

२८

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ३१ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ३० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ३० ॥ ॥

[illegible]

श्रीवत्सलक्ष्म्यं विष्णुं पुरिशयमभायतम् ॥ ३० ॥
एवं संसारपतितं सन्निधायत्रिविधदुःखार्तं
मज्जयितुं प्रवृत्तं तवयतः। अङ्कमेति।
उत्कीर्णः अङ्कसंपर्कमात्रेण श्रीवत्सलाञ्छित
भक्तकरसंपर्कमात्रेण पल्लवरूपेण सिद्धम्
पवित्रपतितोद्धृतः नमीकृतश्रीदिव्यैः स
वितः अतश्श्रीवत्सलक्ष्म्यं पुण्यभाजपेयमान
वति प्रपत्तिनिर्मुक्तिं ॥ ३० ॥ ॥
उपशमभवशैवभासां दत्तमस्मिनः। अत्र
कैवल्यकेवलकत्रिविधातिंपरम् ॥ ३३ ॥
उद्गीर्णप्रवृत्तमिदमजं तद्भुक्तिं कैवल्य
ति। उपशमसमिति। एवं भक्तान् भुक्त्वा लक्षण
पाञ्छितभक्तकरसंपर्कमात्रेणस्नेहवतधम
स्मिनः प्रवृत्तानिवृत्तमार्गं कृतवतस्स
दृष्टिः अकर्मस्वपमसंस्तुभय अस्मिन्
गतवन्मनांसि सुवर्णवत्कामलभवप्रसंभव

30

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥ ॥
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

एवमार्कं भजित्व मती विज्ञनभयाद्भुः कि
मः श्रुत्वा ॥ ३५ ॥ ॥ कालमद्रमन्न
स्त्रीयैर्मिन्मित्तिरिति उत्तमैः उत्तम
द्रुमाद्रुउत्तमयैवत्ता ॥ ३६ ॥ ॥
कालकालमगीरवत्त्य भविष्यंयंत्र
लिनमद्रमश्रिउर्द्धमित्तिरिति श्रियमेन
श्रीमन्त्रैविश्वमन्नलक्ष्मीणल्ल्रैः माप
विमर्षैः भजितमन्नभयः श्रुनभयाद्भुः
कमः श्रुणिति नवकुलमगीलमीनभत्रभय
मिमद्भवन्मुद्रै मर्वाण्यवर्धेत्रमभयऽ
दुमद्रमुदमद्वान्तमन्मत्रमभयान्देव
रत्नद्भूलभयः श्रीदेवरत्नद्भुमनिभयऽह
मिद्भुरु मद्भुनेत्रभयाम मद्भवमुद्रकय
भुमुतऽहमद्भु मिन्नमीनभत्रमिविकन्वद्रु
नत्रभयामिमद्भवमुद्रनाद्भुनः उद्धुन श्रु
ज्ञकेमेनभक्तन्मद्भुः ठिमान्नमिदन्न।

श्री.
पं. म.
०७

ऽमिति। शुद्धभूतेष्वपि शुद्धेषु मे: तैर्नैव के
मेव मत्सम्बन्धेत्यभिमानेन स्थितेष्वपि मम यः
शुद्धस्वरूपः केवलं तत्र भयात् किमपि न तत्र
भयात् किमपि स्वस्वरूपेण स्थितः । तस्मात् केवलं शुद्ध
नैव लभ्यते ज्ञानतः ॥ ३७ ॥ ॥
यत्र यद्यपि कर्त्ता तथापि कर्म विवेकतः । शुद्ध
न तत्स्वरूपेण स्वरूपयोगतः ॥ ३८ ॥ ॥
कथं तत्र नैव विधिः शुद्धेन स्वरूपं तत्र लीनमस्ति
केवलं विवेकस्तत्र लीनः । यत्र यद्यपि कर्त्ता
इमिति । यत्र यद्यपि कर्त्ता तत्र स्वरूपं तथा
कर्म विवेकतः तथापि कर्मणा तत्र भयात् लीनं
विवेकतः भूतेष्वपि विवेकेन न तस्य काल
न यत्र तथापि कर्म तत्र भयात् किं शुद्धः तस्य
कालेन शुद्धं भूतेष्वपि तत्स्वरूपं केवलं
स्वरूपं तत्र निःस्पृहं निर्मलं स्वरूपं निर्लिप्तं
स्वरूपं स्वचेतनं स्वरूपयोगतः स्वप्रतिष्ठितं

𑆪𑆛𑆮𑆠𑆵𑆑𑇀𑆰𑆟𑆂 ॥ 𑇓𑇑 ॥ ॥ [illegible]𑆩𑆷𑆬𑆩𑆤𑆶
[illegible]𑆪[illegible]𑆩𑆳[illegible]𑆂। [illegible]𑆪[illegible]𑆠𑆴𑆑[illegible]
[illegible]𑆩𑆤𑆩𑇀 ॥ 𑇓𑇓 ॥ [illegible]𑆵𑆮𑆴[illegible]
[illegible]𑆪[illegible]𑆠𑆴[illegible]𑆪𑆠𑆴। [illegible]𑆠𑆴। [illegible]
[illegible]𑆥𑆷𑆫𑇀𑆮𑆁 𑆩𑆷𑆬𑆩𑆤[illegible]𑆩𑆪[illegible]
[illegible]𑆠𑆴 𑆩[illegible]𑆂 [illegible]𑆪[illegible]𑆁[illegible]
[illegible]𑆪[illegible]
𑆩[illegible] [illegible]𑆪𑆂[illegible]𑆁
[illegible]𑆂 [illegible]𑆩𑆠𑆴 [illegible]𑆩𑆤𑆁
[illegible]𑆩𑆷𑆬𑆩𑆤[illegible]𑆩𑆤[illegible]𑆠𑆴[illegible]𑆠𑆴
[illegible]𑆂 𑆩𑆷𑆬𑆩𑆤[illegible]𑆠𑆴[illegible]𑆂 [illegible]𑆪[illegible]
𑆠𑆴𑆑[illegible] ॥ 𑇓𑇓
𑆬𑆴𑆁𑆓[illegible]𑆂। [illegible]
𑆠𑆴𑆑[illegible]𑆬𑆴𑆁𑆓[illegible] ॥ 𑇓𑇑 ॥
[illegible]𑆩𑆷𑆬𑆩𑆤[illegible]𑆪[illegible]𑆠𑆴𑆑𑆼
[illegible]𑆪[illegible] 𑆬𑆴𑆁𑆓𑆩𑆤[illegible]

𑆯𑇀𑆫𑆵·
𑆥𑆁· 𑆱·
𑇐𑇑

नयति। लिङ्गेति। सम्बुद्धौ सम्बुद्धेर्वक्ष्यं
लिङ्गत्वेन लिङ्गसम्बन्धसमानाधिकरणत्वेन, शुद्धी
ति शुद्धत्वेनैव तत्र सर्वेषां मतोपि शुद्धेन तत्र सू[illegible]
नेत्रयः शुद्ध। उक्तेन शुद्धत्वेन लिङ्गस्य
त्वं लिङ्गसमानाधिकरणस्याल्पतरिकः [illegible] ॥ ३७ ॥
उभिविकल्पविशिष्टः किमः पूर्वभेदेपियः
[illegible] सर्वस्य [illegible] ॥ ३८ ॥
[illegible] किमविवेचन [illegible] लिङ्गसमानाधि
करणं [illegible] पूर्वभयामि
केमाहितयस्य [illegible]
[illegible]। उभिविकल्पमिति। [illegible] लिङ्गमर्गी
[illegible] पूर्वभेदेपियः [illegible]
[illegible] किमविविक्त शुद्धेः [illegible]
[illegible]। [illegible]। [illegible]
[illegible] लिङ्गमर्गी [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥ ॥ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ॥

स्वंसंसुत्रसठिण्य मच्छुत्रिकसत ।
सत्यांविकृतेति । स्वंसैयंमिवसत्तुऽङ्गमि
मन्येयसत्तद्भुलीवियिकमणी उमापिकु
तेसत्यांविकृतप्रचेतु विजयपरिकृत्याप
ज्ञैठमतजितं सक्षिप्तमनक्षं पाभूक्रिवसत
वत्क्रेनलक्षुते ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥
सविकल्पस्यलक्षूकेलपत्रस्यमवपुडं ।
निर्विकल्पस्यलक्षूवेनपांभूनससत्त्वेता ॥ [illegible] ॥
नचकिंसतवत्क्रेनलक्षूं सविकल्पसत्तनिर्वि
कल्पमिति विकल्पभूतसपर्णमिषसतज
वचांसी । सविकल्पस्येति । सविकल्पस्यवि
कल्पेनविपरीतत्वेनकल्पितेननसत्त्वेदमि
तुपेलसतवत्तुतेऽति सविकल्पस्य [illegible]
कृते वत्क्रेनेक्षेलक्ष्यूस्यवक्त्वागतय
प्रतिसत्त्वस्य वसतस्य भिम्तुंस्यता विशी
येसवमिषसत निर्विकल्पस्यनसत्त्वेह

५२

मिनदित्तस्य लक्षणं लोकेनक्त मिनांसुनम मं
नवि उपपक्ष भन्नभधिनमं नवति लक्षणं।
मवेत्तेनिचिकल्पकस्य लक्षणं मितियवत्त
मिसुक्तीमत्पुत्तवस्य त्रमं मेक्ष मिति ॥ स्त ॥
विकल्पेन मजवत्तुत यःमनविकल्पः ॥
विकल्पेनिचिकल्पस्य सविकल्पस्य वान्त वे
त्त। तत्रेदं नतिरकत्पनवभुरुत्रसूयान्मयः १०॥
विकल्पस्य चकं मेधमाङ। विकल्पत्ति।
सविकल्पस्य वानिचिकल्पस्य वालक्षणं व
मितियेविकल्पसूयानः सकिंनिचिक
ल्पस्य उत्तसविकल्पस्य नवेत्त। तत्रेदुखवम
धवोहाक ति सूयेतस्य धत्ताम्व मन्तइति
तीयेधवो मनवपुरुमयः तत्रापि सविकल्प
स्य विकल्पत्तेनइ विकल्पेन मजवत्तुत्तरतेन ५
इतीयात्तु विकल्पधमेन सम्भत्तु विकल्प
धमेन संकाण्वाविकल्पेठिणीयत्त कुवैणा
काम्वमत्त। सुयमेकाम्वविकल्पमूय।

श्री
पं. म.
३०

[illegible]

[illegible]

५४

वर्त्तते पृथग्वस्तुत्वात् क्रियापि क्रियावित्
वर्त्तते क्रियावतिव [illegible] तः [illegible]
[illegible] इति सर्वं [illegible] न [illegible]
सर्वं [illegible] सर्वं [illegible] । [illegible]
[illegible] विकल्प [illegible] सर्वं
[illegible] सर्व [illegible]
[illegible] ॥ १० ॥ ॥
विकल्पतमसा [illegible] । वि
कल्पित [illegible] विकल्पितः ॥ १३ ॥
[illegible] ।
विकल्पेति । विकल्पतमसा [illegible] विकल्पेन
विकल्प [illegible] सं [illegible]
[illegible] विकल्प [illegible]
[illegible] विकल्पितं [illegible] सविकल्प
[illegible] निर्विकल्प [illegible] विषयी
[illegible]

श्री. पे. सं. ३३

𑆩𑆁𑆪𑆼𑆟𑆳𑆩𑆴𑆂 𑆃𑆩𑆴𑆩𑆾𑆑𑆤𑆢𑆶𑆲𑆳𑆩𑆪𑆼𑆟𑆳𑆢𑆶𑆠𑇀𑆠 𑆃𑆩𑆼𑆑𑇀𑆰
𑆪𑆳𑆫𑆬 𑆱𑆲𑆶𑆲𑆁𑆤𑆩𑆠𑆼𑆤𑆩𑆳𑆱𑇀𑆩𑆷𑆪𑆼𑆱𑆶𑆲𑆁𑆩
𑆩𑆮𑆳𑆪𑆴𑆑𑆳𑆫𑆬𑆼 𑆱𑆶𑆲𑆩𑆴𑆠𑆴𑆮𑆳𑆠𑆑𑇀𑆬𑆴𑆑𑆽𑆬𑆩𑆴𑆠
𑆱𑆶𑆲𑆑𑆩𑆲𑆠𑆴𑆓𑆴𑆠𑇀𑆫𑆾𑆩𑆠𑆴 𑆱𑆠𑆴𑆩𑆲𑇀𑆩𑆷𑆪𑆼𑆠
𑆬𑆂 𑆤𑆴𑆲𑆩𑆼𑆑𑆩𑆤𑆼𑆑 𑆥𑆠𑇀𑆫𑆴𑆩𑆳𑆩𑆲𑆶𑆩𑆴𑆠𑆴𑆬𑆩𑆴
𑆱𑆳𑆠𑆴𑆂 𑆩𑆁𑆪𑆼𑆟𑆮𑆴𑆑𑆟𑆪𑆼𑆫𑆩𑆩𑆮𑆳𑆪𑆑𑆳𑆫𑆬
𑆱𑆠𑆵𑆪𑆁𑆑𑆩𑆼𑆠𑆴𑆬𑆩𑆴𑆠 𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆳 𑆱𑆠𑆼𑆩𑆖𑆼𑆱𑇀𑆩
𑆥𑆷𑆑𑆬𑇀𑆢𑆴𑆠𑆳𑆱𑇀𑆮𑆼𑆠𑆴 𑆱𑆲𑆂 ॥ 𑇔𑇓 ॥ ॥
𑆱𑆁𑆮𑆠𑇀𑆠𑆽𑆱𑆩𑆱𑇀𑆯𑆤𑆩𑆲𑆷𑆤𑆁𑆱𑆷𑆮𑆬𑆁𑆜𑆮𑆠 । 𑆱𑆲𑇀𑆫
𑆩𑆱𑇀𑆠𑆮𑆴𑆠𑆲𑇀𑆮𑆤𑆩𑆲𑆷𑆤𑆁𑆩𑆤𑆤𑆁𑆠𑆠𑆠 ॥ 𑇔𑇓 ॥
𑆱𑆠𑆳𑆮𑆠𑆥𑆶𑆱𑇀𑆫𑆩𑆱𑆜𑆼𑆬𑆑𑆴𑆥𑆱𑇀𑆫𑆁𑆜𑆮𑆠𑆵𑆲𑆑𑆱𑇀𑆩
𑆪𑆁 𑆥𑆬𑆴𑆠𑆩𑆳𑆫 । 𑆱𑆫𑆩𑆴𑆠𑆴 । 𑆱𑆫𑆁𑆱𑆳𑆟𑆠𑆪𑆱𑇀𑆥
𑆱𑆤𑆩𑆴𑆲𑆩𑆴𑆟𑆱𑇀𑆫𑆳𑆱𑆠𑆼𑆠𑇀𑆫𑆩𑆶𑆑𑆳𑆫𑆬 𑆥𑆠𑇀𑆠𑆽𑆩𑆠𑇀𑆠
𑆩𑆱𑇀𑆠𑆳𑆬𑆴𑆥𑆳𑆠𑇀𑆠𑆽 𑆯𑆩𑆱𑇀𑆯𑆤𑆩𑆲𑆷𑆤𑆁𑆠𑆼𑆣𑆁𑆮𑆳𑆲𑆂𑆤
𑆩𑆲𑇀𑆱𑆱𑆵𑆮𑆱𑇀𑆑𑆼𑆥𑆼𑆑𑆲𑇀𑆬𑆖𑆳𑆱𑇀𑆯𑆤𑆩𑆲𑆷𑆤𑆁
𑆱𑆷𑆮𑆬𑆁𑆜𑆮𑆠 𑆥𑆠𑇀𑆫𑆩𑆮𑆱𑆩𑆳𑆩𑆪𑆼𑆮𑆲𑆳 𑆱𑆱𑇀𑆠

46

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

48

प्रकुतमितिद्दौर्बल्यकमिक्षुद्रमितज: ॥ ५० ॥
वर्तीनभवर्तिद्भूयज्ञेन्द्वेवधानामपि। प्रत्यक्षु
मजसहममेक्षणाभिसन्नद्भुवेत ॥ ५१ ॥ ॥
नन्तमन्नीवक्कुद्मकभूयज्ञत्वक्कुंवन्तु
वर्तिमिहमज्ञ उक्तानिकभूयज्ञत्वेपि भू
षमिकमेवभूयज्ञमन्युपामि मजकागिमजितु
कुवर्गीज्ज। वर्तीनामिति। छायकर्णमन्त
भनिवर्तीनं प्रत्यवर्तिद्भूवात्कुपेत्वणाति
द्भूषमापि भूयज्ञेक्षणाप्रिचकालीनाम
पि प्रत्यक्षु मजन्गुष्टकमन्नाद्दियः भूत्वाविम
ध: कममुक्तगष्टयोणिन्त्रिविणमितेवधामि
तिपतज्ञलिनःप्रहितहृत यज्ञमजसह
ममेक्षण: भूत: भक:ममामुहुमेनमलनिते ठ
वनापूः मंक्षणविमधमुहंमजकागिकान
मुहंमजवतुमनात्रुत ॥ ५१ ॥ ॥
यमनामीविनिवात्मुऽहमितिनिकरण, तणव

श्री.
पं. म.
३२

निर्मलवक्ष्यसंपन्नस्यहृदयम् ॥ ५३ ॥
तद्यथापाणिः प्रच्यावतेदिगुणितं गृहे
इत्यस्य भवति मूर्ध्निधेनुनिर्गुणम्
तेनविमिश्रः यवेति. यस्मात्मिन्द्रियम्
निष्कृतिमेघमध्यप्रतिष्ठितकैः स्फुटैः
निकृत्यानकृतलक्षणवर्णा क्लेश्वरस्मि
भवत्यभिमतनिर्विकल्पकसमाधिप्रसङ्ग
भञ्जनयमिदृश्यहृदयम्. निगदितवर्णा ॥ ५३ ॥
सर्वासप्रत्ययंभवाति भासितः कर्मकेन्द्रः. सर्व
नविलयन्तिसद्गुणस्य विवेचते ॥ ५४ ॥
पुरुषसमाश्रितवत्तत्त्वलभ्यः, सर्वमर्पयति.
सर्वस्मिन्पदं ३ डमिश्रम भासितः भवति
तः कर्मकेन्द्रः कर्म भूतभूतलक्षणं
केन्द्र इन्दुधलक्ष्मणं सर्वविभितनिकर्मणि
इह तेनसमापि विलयंयान्तिविनश्यति
मीयन्तेमस्तकमलिकश्रिया भूमध्ये इति

50

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्री. पं. म. ३५

रकश्चशुक्तुति भन्यर्जुक्कुडेञ्जन विरुदु मं
श्रुवमभन्द निःमेधयत्न्ठवति श्रमभूविला
पिदु विनामिडे [illegible] कश्मभञ्जय
मगुलेडुलिडे [illegible] लिडंयमन्ठवाड
उष्टेडुलिडेउक्कुडे धिनमिडे ऽडियवड। ॥ ७० ॥
[illegible] भूडिवहु मदुक्तेरमावठभिडे। कर
मलकवह्नुा मधेरवं भूभ्यडे ॥ ७१ ॥
ठलिडभाज। [illegible] भिडि। [illegible]
[illegible] भूडिवहुं [illegible] भूडिवहु
गजिडंमद्दुक्तेरमावठभिडे [illegible]
भूकमिडेडेडु कर मलकवड। कर [illegible]
लकूनेमव भिव [illegible]
मजेवेठंम्हवं भूभ्यडेमनयडि ॥ ७२ ॥ ॥
[illegible] ॥ ७३ ॥
[illegible] भाज। [illegible] भिडि।

52

𑆱𑆽𑆩𑆴𑆑𑆥𑇀𑆫𑆖𑆑𑇀𑆫𑆁𑆠𑆤𑇀𑆩𑆳𑆥𑆤𑇀𑆤𑆁𑆱𑆁𑆠𑆠𑇀𑆮𑆁𑆤𑆲𑆼𑆠𑆶𑆱𑆴𑆠
𑆤𑆩𑆱𑇀𑆠𑆶𑆁 𑆩𑆼𑆫𑆁𑆯𑆶𑆑𑇀𑆫𑆮𑆴𑆱𑇀𑆥𑆶𑆤𑆁𑆮𑆶𑆢𑇀𑆢𑆴𑆥𑇀𑆫𑆖𑆑𑇀𑆫𑆁𑆪𑆣
𑆖𑆮𑆴𑆠𑆠𑆪𑆑𑇀𑆫𑆶𑆠𑆁𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆁𑆩𑆩𑆱𑆶𑆥𑆳𑆁𑆮𑆑𑇀𑆫𑆴𑆮𑆱𑆤𑆠𑆴 ॥ 𑇗𑇓 ॥
𑆱𑆣𑆼𑆫𑆱𑆳𑆯𑇀𑆩𑆮𑆴𑆱𑇀𑆥𑆶𑆤𑆁𑆱𑆳𑆁𑆑𑇀𑆱𑆽𑆩𑆴𑆑𑆥𑇀𑆫𑆖𑆑𑇀𑆫𑆩𑆵 ।
𑆩𑆁𑆩𑆳𑆫𑆑𑆳𑆫𑆤𑆱𑇀𑆥𑆶𑆤𑆠𑆩𑆩𑆯𑇀𑆫𑆥𑆶𑆖𑆑𑇀𑆫𑆳𑆂 ॥ 𑇗𑇔 ॥
𑆱𑆣𑆼𑆫𑆱𑇀𑆥𑆶𑆤𑆖𑆬𑆩𑆳𑆢। 𑆱𑆣𑆼𑆫𑆱𑆳𑆠𑆴। 𑆱𑆳𑆁𑆑𑇀𑆱𑆽
𑆩𑆴𑆑𑆥𑇀𑆫𑆖𑆑𑇀𑆫𑆁𑆱𑆳𑆩𑆶𑆠𑆁 𑆱𑆣𑆼𑆫𑆱𑆳𑆯𑇀𑆩𑆮𑆴𑆱𑇀𑆥𑆶𑆤𑆁𑆱
𑆣𑆼𑆫𑆱𑆳𑆱𑇀𑆩𑆼𑆤𑆮𑆴𑆱𑇀𑆥𑆶𑆤𑆁𑆩𑆁𑆩𑆪𑆮𑆴𑆥𑆢𑇀𑆪𑆫𑆴𑆠𑆁
𑆪𑆱𑇀𑆥𑆶𑆤𑆁𑆠𑆠𑇀𑆮𑆁𑆩𑆫𑆑𑆳𑆫𑆖𑆱𑇀𑆥𑆶𑆤𑆠𑆩𑆩𑆂𑆩𑆁𑆩𑆳𑆫𑆑
𑆫𑆁 𑆪𑆱𑇀𑆥𑆶𑆤𑆩𑆶𑆠𑆱𑆽𑆮𑆠𑆩𑆯𑇀𑆫𑆱𑆶𑆖𑆑𑇀𑆫𑆽
𑆩𑆯𑇀𑆫𑆑𑆑𑆬𑆵𑆤𑆂𑆯𑆢𑆂𑆮𑆤𑇀𑆠𑆩𑆩𑆯𑇀𑆫𑆥𑆶𑆖𑆑𑇀𑆫𑆫𑆅
𑆮𑆱𑇀𑆥𑆶𑆤𑆠𑆩𑆼𑆤𑆴𑆮𑆠𑆑𑆩𑆴𑆠𑆢𑆂 ॥ 𑇗𑇕 ॥
𑆅𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆮𑆴𑆮𑆼𑆑𑆁𑆮𑆴𑆤𑆳𑆪𑆮𑆴𑆤𑆮𑆑𑇀𑆫𑆤𑆂𑆩𑆩𑆤𑆳𑆪
𑆮𑆴𑆤𑆬𑆴𑆠𑆩𑆁𑆩𑆳𑆠𑆴𑆫𑆤𑆶𑆂𑆥𑇀𑆫𑆼𑆠𑆴𑆣𑆫𑆁𑆥𑆱𑆁𑆤𑆼𑆫𑆤𑆴
𑆫𑆠𑆳 ॥ 𑇗𑇖 ॥ ॥ 𑆅𑆠𑆴𑆯𑇀𑆫𑆵𑆥𑆤𑇀𑆖𑆱𑇀𑆠𑆮𑆵 𑆩𑆠
𑆠𑆠𑇀𑆮𑆮𑆴𑆮𑆼𑆑𑆱𑆵𑆥𑆴𑆑𑆳 ॥ ० ॥ ० ॥

𑆯𑇀𑆫𑆵।
𑆥𑆁। 𑆱𑆳।
𑆠𑆶𑆫

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ७४ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ० ॥ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ० ॥ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्री.
पं. म.
३३
त्रि.

57

𑆱𑆷𑆫𑇀𑆪𑆂 𑆱𑆁𑆑𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆱𑇀𑆪 𑆩𑆴𑆠𑆁 𑆑𑆩𑆴𑆑𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆳𑆨𑆳𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴
𑆣𑆪𑆥𑆷𑆘𑆑𑆁𑆱𑆁𑆑𑇀𑆫𑆩𑆪𑆠𑆴𑇅 𑆑𑆩𑆴𑆩𑆴𑆠𑆴𑇅 𑆑𑆩
𑆩𑆴𑆑𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆱𑇀𑆪 𑆥𑆴𑆟𑇀𑆝𑆼𑆤 𑆠𑆠𑇀𑆨𑆮𑆠𑆴𑇅 𑆱𑆷𑆫𑇀𑆪𑆮𑆫𑇀𑆰𑆼 𑆓𑆭𑇀𑆖
𑆓𑆭𑆼 𑆱𑆮𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆥𑆳𑆠 𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆫𑆂 𑆱𑆁𑆑𑇀𑆫𑆩𑆂 𑆱𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑇅 𑆠𑇅 𑆓
𑆬𑆣𑇀𑆮𑆼𑆤 𑆓𑆮𑆬𑆴𑆩𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆫𑆂 𑆱𑆁𑆑𑇀𑆫𑆩 𑆥𑆑𑇀𑆰𑆳𑆢𑆷𑆠𑇀𑆠𑇀𑆠𑇅

𑆑𑆩𑆴𑆱𑆷𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠𑆴𑆑𑆬𑆾𑆱𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀 𑆱𑆁𑆑𑇀𑆫𑆩
𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆫𑆂 𑆱𑆷𑆫𑇀𑆪𑆮𑆫𑇀𑆰𑆼 𑆓𑆭𑇀𑆖𑆼𑇅 𑆓
𑆬𑆣𑇀𑆮𑆼𑆤 𑆓𑆮𑆬 𑆠𑇅 𑆱𑆷𑆠𑇀𑆠𑇀𑆠 𑆠𑆠
𑆫𑆂 𑆱𑆁𑆑𑇀𑆫𑆩 𑆩𑆵𑆬𑆤𑆼 𑆨𑆳𑆠𑇀𑆫𑆁𑆱𑆂 𑆣𑆤𑇀𑆫
𑆢𑆼𑆮𑆱𑆑𑆭𑇀𑆝𑆼 𑆱𑆁𑆑𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆳𑆨𑆳𑆠𑇀𑆫𑆓𑆷𑆘𑆂 𑇅

𑆥𑆑𑇀𑆰𑆳𑆢𑆑𑇀𑆱𑆮𑆠𑆴𑇅 𑆤𑆼𑆠𑆴 𑆩𑆵𑆬𑆤𑆼 𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆫𑆁𑆱𑆩
𑆱𑆩𑆬𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑇅 𑆣𑆤𑇀𑆫𑆼 𑆱𑆁𑆑𑇀𑆫𑆩 𑆢𑆼𑆮𑆱𑆑𑆭𑇀𑆝𑆼 𑆥𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑇅 𑆤
𑆑𑆼𑆤𑆣𑆑𑆼𑆤 𑆱𑆁𑆑𑇀𑆫𑆩𑆓𑆷𑆘𑆑𑇀𑆱𑆳 𑆱𑆨𑆴𑆠𑆴𑆑𑆠𑇀𑆠𑇀𑆫𑆴
𑆮𑆱𑆷𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆫𑆱𑆷 𑆮𑆴𑆣𑆪𑆱𑆷 𑆓𑆼𑆓𑆷𑆘𑆩𑆳 𑆢𑆴𑆑𑇀𑆰𑆶
𑆪𑆑𑆩𑆑𑆨𑆳𑆠𑇀𑆫𑆁 𑆮𑆴𑆣𑆪𑆓𑆷𑆘𑆁 𑆑𑆮𑆠𑆵𑆢𑆑𑆂𑇅 𑆓𑇆

58

[illegible] न्द्रिय [illegible] कर्मेन्द्रिय [illegible]
[illegible]
[illegible] । पञ्च [illegible]
[illegible]
[illegible] पञ्चेन्द्रियः [illegible]
[illegible] इन्द्रिय [illegible] पञ्च

पञ्च [illegible] विभन [illegible]
यः । [illegible] पञ्च [illegible]
[illegible] ०० । [illegible]
[illegible] इन्द्रिय [illegible]
[illegible] कर्मेन्द्रियपञ्चकम् । ०० ॥

[illegible] ॥ [illegible] । ०० । [illegible]
ज्ञानेन्द्रिय [illegible] कर्मेन्द्रिय [illegible]
[illegible] इन्द्रिय [illegible]
[illegible] इन्द्रिय [illegible]
[illegible] इन्द्रिय [illegible]

श्री.
पं. म.
३७
ब्रि.

59

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

61

मार्त्तिकैरिति। ०५। [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] ३०

[illegible] ३० ॥

[illegible]

[illegible]

३०॥ ३०॥ ३०॥ ३०॥

ओंतन्मात्रपर्यायेणाव ऽहम्मन्तज्ज । तन्मेति ।
कलितमात्र तत्स्मिति । सर्वत्र भूयेनः म
ध्रुवमुनासन्मात्रमंतयित्र भवतिनिरवयव
सूक्ष्मनवमिति ॥ मतुत्रणावसः मन
सीयवसः किंनसूत्र । ऽहम्मन्तद्भन्तावेंम
मात्रमितियनुत्तंनात्रिंत्रुपयितमत्ते भेत

नामात्रभेन्त्रवस्तैवमात्रितत्स्तु । स्थितः प
ग, नस्येनसत्त्वमुख्य अविरमंयस
वियत ॥ ममात्रंमन्तीयंनवैलम
तत्त्ववत्सनात्र नामात्रपिपापितमं विना
नैवमेत ति ॥ ॥ वैलमात्रव
मिहज । ममिति । नवध्याभात्रपात्मतितिम
तेसः भूतिनभत ऽहम्मन्तध्याकमभात्क
मवस्तुपापितिसमेन स्वतेन्तीहज । तन्मेति ।
सर्वत्र भूयेनः मस्तुमन्तीयसमाहितं
वितभवति उपापितामसमत्रेणुवितव

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्रीमत्सन्देहवेत्रमतिजितमिहन्द। गणपतुष्ट
यामसोऽस्ति ३७ स्तुतिकंपणति स्वनामिहित
३० ऽसन्तीममहत्रं विकल्पुजयपति स्तुटमि
ति स्तुटमामीमितेनवात्रेनसुत्रहमहत्रये

गणपतुष्ट यामसुत्रस्त कृत्कृय ... त्र
श्रना धृजकत्रेमिकतृत्तान्ऽमितुम्नि
समत्रीत ३७ स्वनामहत्रुतिंमेह्व
मिमेतोहुतुमबित: त्रयेमितेतिर
त्रहमतमा नैकमक्रय: ३० स्तुटमा
मीमितत्र्यमत्रेनेवामसस्त्रतमा
स्तुत्रमनेतत्रत्रजयगर्वत्राजतत्रत:
३३ नयत्रतुमभत्रहेवापिमिसमेत
ममय: मस्तुहयेचिरेणिहस्तुटमा
मीक्षयंव त्र म ३३ ॥

गिरुं मक्षय

श्री. पं. म. ३५ त्रि.

हुंवत्रयेऽतिविकल्पत्र: ऽत्रठयं मत्र मय
त्रुमक्षपहलम लं स्तुहत्रहऽजतत्रईत्रयत
ऽत्रेत्र: ३३। हजतत्रुमवन्तुत्रवक
स्तवयाति। नयत्रऽस्ति ३३ ॥

नन्वत्यन्तमपि विषयसम्भिन्नं निर्विकल्पकं बु
द्धिसंस्थं भिन्नं सन्तं विषयस्य सि
ति। उक्तिसूत्रस्य निर्विकल्पकमसत्त्वनिर्विकल्प
कं तु विषये वै हृदयस्य सिद्धं तस्य हृदि ध्येय
रूप। सूत्रसूत्रं। ३४। नन्वुक्तिसूत्रेण
सर्वं निर्विकल्पकं कल्पितं एव ज्ञीकृत

विषयभेदात् सविकल्पकमपि निर्विक
ल्पितं सूत्रस्य सविकल्पकस्य सत्त्वं
तं सिद्धम् ३५ ॥ सतो निर्विकल्पक
कल्पितं सत्त्वम् एवम् ॥

इत्यत्र एतत्

सर्वस्य सविकल्पकस्य नाम सिद्धिः सत्त्वं सतो नि
ति। विकल्पसम्बन्धः सर्वं प्रमाणं यत्र
इति ध्येय प्रतिज्ञाति। तत्त्वं सति। स्वयम्
हि ध्येयः सतोऽनिर्विकल्पकं किं सतिकल्पितं
सति। सम्बन्धस्यानतीति नन्नु सत्त्वश्रवणात्

70

स्वात्मतुल्ययोरहन्त्वभाजिकायाचैतन्यस्य प्राणता । स
र्वात्मतुल्ययोः सर्वैव कल्पनायां प्राणता ॥ तृतीयी
यः स्वभावे निरञ्जकत्व माणिक्युतत्त्वाये प्राणता ।
चतुर्थीयः भव उद्धवस्य प्राणतः सर्वात्मतुल्य कल्प
नाणिक्युन तत्त्वपतु गितिभक्तु माणिक्यन मनुयेः
कल्पनाकिंन स्वामित्वमस्य । निराणिक्युमडति ३५

जाड्डति । निराणिक्युनेतत्त्वस्य मिमीस्त
उ. ३५ ॥ सन्मात्रीमितिमत्व क्रतोमव
स्पर्शमपतेत । प्रतोमपुनजाति स्पर्श
मवलोकेजसत्यजाग्रत ॥ ॥

नवप्रमदेव मधुनुसंभीमित्तइयवस्त्रा प्रणतु उ
जोवस्य सर्वत्व मे प्रेमसमनुसंभीमित्तइप्रणिमि
मेधित्वे तिमस्तुत । भामितु । उवानि सन्मात्री
मिति सर्वोयेतजतोमेश्रितय प्रभिमत्तुतज
नि: नाश्रिमस्तुनजातिस्पर्शात सतः सन्मात्रीमिति
सत्वपत्रमिति । द्वितीयं पत्तमा सत्यपरिज

श्री:
पं. सं.
३५
श्रि:

ति मैवमिति भगवज्जिनेश्वरः पश्चादऽह
मच्युत । लोकेशं [illegible] मिति ३७ ॥ लोको
[illegible] भूयेन [illegible] ऽह
मच्युत । कथमिति । एवं लोके [illegible] कि
[illegible] मिति [illegible] मीति ३७ [illegible] दीय
[illegible] इति [illegible]

कथं जगतो वशं [illegible]
मा ऽह मिव भगवा विष्णुं [illegible]
[illegible] ३७ [illegible]
[illegible] मिथ्या [illegible]
[illegible] दीयं [illegible] ३३ ॥

[illegible] कथमिति । [illegible]
[illegible] दीयं [illegible]
[illegible] भगवा विष्णुं [illegible]
[illegible] मिति [illegible] ।
[illegible] इति ॥ ३३ ॥ ३३ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नन्वस्य प्रकः सद्गुरुत्वपि सर्वात्मस्वरूपस्सद्गुरुः
सर्वानन्दस्थितिरूपत्वेनैव स्थितत्वात्। सद्गुरुरिति ।
ननु श्रीगुरोः स्वरूपमेव तत्स्वरूपं कथमपि प्रती-
यमानमिति सद्गुरुस्वरूपप्रतीयमानस्वरूपमपि
नान्यत्वतीतत्वात् । नन्वेतन्नमिति चेत् नन्वेतदि
सद्गुरुत्वस्य वस्तुतः सर्वस्य स्थितत्वात् इति सङ्कृतेः ।

सद्गुरुं सद्गुरुं ध्यायेत् श्रीगुरुं तं नमाम्यहम्
यतः श्रीगुरुरेव स्वरूपं स्वरूपं स्वयं
स्वात्मनात्मा चेत् सद्गुरुरपि सर्वात्मा
सर्वस्वरूपः स्वयं निर्मलः स्वयम्
सिद्धः सर्वत्र संस्थितः २४ ॥

सद्गुरुरिति । तस्य स्वरूपस्य सर्वत्र स्वरूप-
स्वरूपत्वात् परिज्ञाति । सर्वस्मिन्निति । सर्वस्य
स्वरूपत्वेन सद्गुरुस्वरूपं सर्वत्र
सत्ता । निर्मलस्वरूपसिद्धमिति २४ ॥
एवं निष्प्रपञ्चस्य सर्वात्मनः श्रीगुरोः स्वरूपं ।

श्री । पं । स । ३७ क्षि ।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

शक्तित्वेन स्फुटं प्रकाशयति वासनासीमि
ति। तस्तसीतुसमातुन्त सपुत्त स्वमिस्
त्रिः प्रकाशमिच्छतः। तद्भितस्तसीमिति
कंसस्य प्रपुत्तऽस्तत्स्तज। स्त्रेणामिति। त
तत्स्तत्स्तज। तत्त्रिपपकामिति ५० ॥

वासनासत्रिसनसीतुसन्नी किंस्तु
तुसः सत्रेणातुससः सर्वंवस्तु, स्तुत्रि
भेदनात् ५० स्वतास्वद्वितीयद्वंतु
तद्वत्वत्रि नन्लुत वलिकंपत्सूत्तकरे
स्लीविंतल तुपपको ॥ ५० ॥ कृ १

नलितसात। स्वतास्वेति। यतः स्वतः सर्वंस
यायनात्रि स्वतास्वतुसुवस्व साया या स्वपि
द्वितीयद्वंनन्लुतत्रि नैव द्वियतेऽस्तज्ञः।
स्वात्स्तु द्वितीयद्वंतज्जीकंणे स्वसुत्तसा
६ ॥ नलेकऽति ॥ ५० ॥ ५० ॥

यत्सत्र पिहितं जीवितं पिहितं सन्नते सतःस
त्तोऽपि यथा जीवितं मम शीतिसम्भूते। सत्र
पिहितेति। यस्मिन् जीवितं चन्द्रकाल
मपि तत्त्वं स्वरूपं शीतिं मोहयति।
तेहेति ॥ ५३ ॥ सन्धिं त्रिकैर्येलयति।

सत्र पिहितं जीवितं सन्नते तत्त्वा
तथा यस्मिन्ः किं तत्त्वं स्वरूपं
किं तथा ५३। मयथा सत्त्वाः
यथा मिता सत्त्वं कान्ते
यथा ददतीयं सन्नते कथमा ५३ ॥

तथा मयेति ॥ सत्त्व सन्न मतिं
पित तत्त्वं तत्त्वमते सन्न तत्त्वम
तथा नीम सन्नते यथा सत्त्वीयं मिते
त ॥ सत्त्व कान्तमिति। ५३ ॥ ५३ ॥
यत्र सत्त्वः मतिं मयहयतते तत्त्व सर्वं सन्न

सी॰
पं॰ स॰
३७
शि॰

पृथक्त्वेन पूर्वमुक्तं। न द्वितीयः [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] ॥
न तु [illegible] इति। एकत्वमवगन्तव्यम् [illegible]

न तु [illegible] वर्तते: [illegible] किं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ५० ।
[illegible]
[illegible]

[illegible] इति।
५० [illegible]
[illegible] ५० [illegible]
[illegible] इति ॥ ५० ॥ ५० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

θ3

एवं हृत्तु विपरीतभूमिर्भवं स[illegible]त्यपि तत्र वा तु
[illegible]। एवमिति। एवंभूत स्वकाल[illegible]ति वि
मर्शस्य [illegible] विमर्शस्य [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]। ततः स्मृति विमर्शेन [illegible]

एवं स्मृतिविमर्शस्य [illegible]
[illegible]। विमर्शेन विना [illegible]
विषयत् ॥ [illegible]। भिन्नो विषय [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]
[illegible] ॥ विमर्श [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सभक्तेभ्यंस्तु मिदमस्तुतत्। मद्विलकालस्तु
तंत्रविमत्स्तुतत्सहज। तत्रीति। सविते यस्मान्याय
तुंभिह्वेषवतुवेलम्बलंभवनुदुतभाज। यस्मभक्त
ममान्तमिति। यस्तुतस्तुसंभुविहभान्तमपित
मेतत्तत्। सुप्रनानन्दमिवसिद्धोहस्त्रः ।१०॥ सत
वियमेनमदेपलहभान्यस्तुनिमस्युमात्सहम

तत्रीतिमस्तुतुनमस्तुपलंभान्यिकस्तुत
त। यस्मभक्तममान्तत्सिद्धश्वप्रनाम
मिवतु १०॥ नतिहजीमिदमदेत
सहयस्यपावका। वियस्तुतेभवव
सुपनतुंकुरविमस्यः १०॥ तस्तुपि
तमेनेमितेनितुर्ज्ञियनतिमतुम। सनेक
स्तुत्तमयस्तुत्तुस्तुत्वेसंतवम ।१३।

स्तुज। नतिहजीति। १०॥ तदियस्तुपिवस्तुतत
सपिनिम्रितेनतवतीतिमस्तुत। तस्तुपितमतति
स्तुपनिजांवतुंनिम्रयस्तुवकमलंपास्त्राति। तम
सनेकस्तुमिति ॥ १४ ॥ १३ ॥ १३ ॥

श्री· पं· स· ६३ ग्रि·

[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] ॥ १४ ॥ ॥ १४ ॥

[illegible] ॥ १४ ॥ ॥ १४ ॥

वियद्दृष्ट्वैव सर्वदलभाग, तुष्टेति ।१५॥
वियन्मिश्रं भवेत् सर्वं समभागमिति यतः किंचि
शीघ्रं भवेत्, रविभागाभिति, चेव वियद्दृष्टे भवे
त् [illegible]
[illegible] ।१६। [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible] ।१५॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ।१६। [illegible]
[illegible]
[illegible] ।१७।
[illegible]
[illegible] ।१८।

[illegible]
।१९॥ [illegible]
[illegible]

[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १७ ॥ [illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥ १७ ॥ [illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑇙𑇒

𑆤𑆤𑇀𑆮𑆪𑆁 𑆩𑆶𑆤𑆳𑆡𑆴𑆑𑆠𑇀𑆮𑆂 𑆱𑆑𑆩𑆬𑆑𑆬𑆴𑆠𑆃𑆱𑇀𑆩
𑆱𑇀𑆩𑆶𑆠𑆳𑇅 𑆫𑆳𑆬𑆼𑆢𑆴𑆩𑆴𑆠𑆴𑇅 𑇓𑇓 𑇆 𑆮𑆑𑇀𑆫𑆁 𑆱𑆮𑆶𑆩𑆳𑆤𑆳𑇅
𑆮𑆑𑇀𑆫𑆴𑆠𑆴𑆠𑆴𑇅 𑆪𑆢𑆴𑆮𑆪𑆳𑆮𑆴𑆮𑆑𑆫𑆤𑆳𑆬 𑆥𑆱𑇀𑆩 𑆪𑆠
𑆓𑆠𑆃𑆱𑇀𑆩𑆶𑆠𑆳𑇅 𑆥𑇀𑆫𑆩𑆳𑆤𑆓𑆠𑆴𑆫𑆴𑆠𑆴 𑆑𑆼𑆠𑆥𑆱𑇀𑆩𑆃𑆱𑇀𑆩
𑆑𑆱𑇀𑆩𑆪𑆳𑆤𑆳𑇅 𑆪𑆱𑆵𑆠𑆴𑇅 𑇓𑇔 𑇆 𑆪𑆢𑆩𑆠𑇀𑆫𑆳𑆑𑆫
𑆬𑆥𑇀𑆫𑆮𑆳𑆤𑆶𑆫𑆮𑆳𑆤𑆥𑇀𑆫𑆮𑆑𑆁 𑆱𑆑𑆵𑆪𑆁 𑆥𑆢𑆩𑆩𑆪𑆠𑆴𑇅

𑆮𑆑𑇀𑆫𑆴𑆠𑆱𑇀𑆛𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆑𑆩𑆳𑆱𑇀𑆩 𑆥𑇀𑆫𑆩𑆳𑆤𑆓𑆠𑆴𑆫𑆶𑆩
𑆪𑆴𑆢𑆴𑆮𑆑𑇀𑆫𑆴𑆂 𑆩𑆴𑆤𑆴𑆱𑆶𑆫𑆂 𑆩𑆱𑇀𑆩𑆮𑆳𑆤𑆱𑇀𑆩𑆮
𑆤𑆳𑆥𑆴 𑇓𑇕 𑇆 𑆩𑆱𑇀𑆩𑆪𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼𑆩𑆮𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼 𑆩𑆼 𑆪𑆠
𑆱𑆶𑆥𑇀𑆫𑆳𑆠𑇀𑆫𑆴𑆩𑆴𑆠𑆶𑆬𑆂𑇅 𑆱𑆶𑆥𑆁 𑆱𑆩𑆠𑆂 𑆩𑆪𑆩𑆠
𑆱𑆶𑆱𑇀𑆩𑆴𑆮𑆴𑆮𑆴𑆩𑆶𑆠𑆥𑆳𑇅 𑇓𑇖 𑇆 𑆩𑆠𑆮𑆴𑆮𑆴𑆪𑆁
𑆠𑆮𑆑𑇀𑆫𑆼 𑆩𑆴𑆱𑆶𑆫𑆩𑆴𑆠𑆩𑆠𑆴𑇅 𑆠𑆥𑆼𑆱𑆁
𑆩𑆠𑆶𑆤𑆂 𑆑𑆬𑆴𑆠𑆃𑆠𑆴𑆩𑆴𑆠𑆪𑆠𑆳𑇅 𑇓𑇖𑇅

𑆩𑆑𑆪𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼𑆩𑆮𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼𑆩𑆼𑆠𑆴𑆠𑆴𑇅 𑆃𑆱𑇀𑆩𑆮𑆴𑆩𑆱𑆥𑆼 𑆮𑆑𑇀𑆫𑆴𑆱𑇀𑆩
𑆱𑆶𑆥𑆁 𑆱𑆶𑆠𑆃𑆱𑇀𑆩𑆵 𑆩𑆣𑆼𑆮𑆑𑇀𑆫𑆴𑆁 𑆮𑆴𑆮𑆴𑆤𑆳𑆠𑆴𑇅
𑆃𑆠𑆴𑇅 𑆪𑆠𑆼𑆩𑆳𑆱𑆶𑆩𑆠𑆂 𑆩𑆣𑆼𑆤𑆼𑆠 𑆱𑆮𑆁𑆥𑆩
𑆃𑆩𑆴𑆱𑆶𑆠𑆴𑆫𑆑𑆶 𑆮𑆴𑆮𑆴𑆩𑆶𑆠𑆥𑆩𑆶𑆪𑆠𑆩𑆴𑆱𑆂
𑆪𑆮𑆁𑆮𑆑𑇀𑆫𑆼𑆩𑆴𑆱𑆶𑆤𑆴𑆱𑇀𑆩𑆪𑆤𑆠𑆩𑆥𑆁 𑆩𑆴𑆱𑆶𑆁𑆩𑆴

𑇆 𑇖𑇗 𑆩𑆶𑆢𑆠𑆩 𑇅 𑆃𑆠𑆴𑇅

यथूभिकालणम्नस्तुणमंस्त्रीविकलमनस्यति।
मनुष्यरति। मत्वानभदवत्तस्त्रिभमश्वः भमरु,
स्तुभभमस्त्रभमश्वभमः रेमश्व उरस्तः। ७४।
विवेकख्यातस्तु भूमंभिख्याहंनिस्त्रिहस्तुरतांरु
भभिख्याहंभितनीयभिहन। भतरति। ७३॥

भतुभेपुःस्तुटउतुःभमश्वभमभंपुतः
द्रुपवेहतुणमनयोद्रस्त्रीयेभित्रलः ७४
भतेविवेभितुःस्वभ्रुतभिख्याहंमवाभित।
स्तुभिम्रमंभतेतुनाकल्पितभ्रितुभित्र
यता। ७३॥ दभितुभतुस्तुवभम
स्त्रभज्ञोभतुपके, दभस्त्रपरतेणतुने
लःभतुणविवस्त्रतभी॥ ७८॥ ॥

डस्त्रंभिख्यातुभितनायडमनाभिविकल्पत। भृती
ति। स्त्रहःभतुभारे प्रपकाउंस्तभिहन॥
भताविविस्त्रतभिति॥ ७८॥ भतप्रघका
लकलभाद। प्रपत्रतुयाभिति, डमनंकिभिति
केवस्त्रकुःभिहःभतेविदमनायडमवश्नु

[illegible] ७५। ७६।
[illegible] ७७॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible] ७७॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ७८॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ७७॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ७३॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]॥ ७३॥ ७३॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

96

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ १ ॥

[illegible]

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

[illegible]

𑆠𑇀𑆱𑆤𑆤𑇀𑆩𑆳𑆗𑆮𑆫𑇀𑆨𑆽𑆮𑆼𑆥𑆥𑆥𑇀𑆫𑆪𑆳𑆠𑆴 𑇅 𑆨𑆷𑆩𑆳𑆬𑆕𑇀𑆓𑆠𑆴 𑇓 𑇅
𑆇𑆥𑆥𑆳𑆠𑆴𑆠𑆩𑆚𑇀 𑆨𑆥𑆨𑆁𑆘𑆠𑆳𑆠𑆴 𑆇𑆨𑇀𑆫𑆩𑆳𑆱𑆴𑆠𑆴𑆁 𑇅 𑇗 𑇆
𑆅𑆠𑆴𑆯𑇀𑆫𑆵𑆥𑆳𑆨𑆑𑆁𑆨𑆥𑆠𑆴𑆮𑆴𑆢𑇀𑆮𑆬𑇀𑆬𑆑𑆩𑆳𑆢𑆯𑇀𑆫𑆵𑆗𑆳𑆠
𑆢𑆵𑆠𑇀 𑆮𑆴𑆲𑆷𑆬𑆲 𑆨𑆤𑆵𑆯𑇀𑆮𑆫𑆳𑆩𑆴𑆯𑇀𑆫𑆶𑆬 𑆫𑆩𑆠𑆯𑇀𑆬𑆳𑆓𑆲

𑆨𑆷𑆩𑆳𑆬𑆽𑆲𑇀𑆫𑆩𑆴𑆠𑆳𑆮𑆴𑆲𑇀𑆫 𑆨𑆷𑆨𑆯𑆁 𑆨𑆷𑆮𑆬𑆁𑆮𑆴
𑆤 𑇅 𑆤𑆤𑆲𑆶𑆠𑆴𑆤𑆮 𑆩𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆲𑇀𑆫𑆷𑆮𑆬𑆁 𑆨𑆳𑆤𑆨𑇀𑆫𑆶
𑆲𑇀𑆫𑆶𑆠 𑇅 𑇓 𑇆 𑆇𑆨𑇀𑆫𑆠𑇀𑆠𑆴𑆩𑆤𑇀𑆠𑆶𑆁 𑆨𑆳𑆩𑆴𑆲𑆁 𑆨𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫
𑆇𑆁𑆤𑆨𑆷𑆠 𑇅 𑆩𑆤𑇀𑆠𑆑𑆳𑆬𑆁 𑆣𑆸𑆠𑆴𑆑𑆸𑆠 𑆮𑆴𑆮𑆼𑆑
𑆠𑇀𑆫𑆴𑆖𑆳𑆠𑆴𑆂 𑆨𑇀𑆫𑆴𑆠 𑇅 𑇗 𑇆 𑇆
𑆅𑆠𑆴𑆯𑇀𑆫𑆵𑆥𑆚𑇀𑆖𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆳𑆤𑇀𑆠𑆁 𑆨𑆘𑆑𑆸𑆠𑆮𑆴𑆮𑆼𑆑𑆾𑆝𑆴
𑆝𑆵𑆪𑆁𑆨𑆑𑆳𑆬𑆨𑆳 𑇆 𑇑 𑇆 𑇑 𑇆

𑆤𑆮𑆴𑆢𑇀𑆣𑆥𑆮𑆴𑆮𑆳𑆩𑆴𑆠𑆨𑆘𑆑𑆸𑆠𑆮𑆴𑆮𑆼𑆑𑆱𑇀𑆪 𑆇𑆢𑇀𑆣𑆢
𑆢𑆵𑆥𑆴𑆑𑆳 𑇆 𑇑 𑇆 𑇑 𑇆 𑇑 𑇆
𑆯𑇀𑆫𑆵𑆫𑆱𑇀𑆠𑆶 𑇆 𑆤𑆩𑆾𑆤𑆳𑆫𑆳𑆪𑆟𑆳𑆪 𑇆 𑇆

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सत्त्वादृढं समस्मयति प्रकृतिमिति । येनासुरेन्द्र
प्रह्लादः पातालाभिसपृक्तपदं तत्त्वतः सत्यलक्ष्य
त्वात्तु स्वलक्षणसंमयसम्बुद्धमूर्त्तं ममानामी
नाभिस्पृयसं स्ववृत्तकः तत्केवलसमन्व
यः फलमयं प्रसुप्त समाव्युत्पन्नं न भवति
प्रकेतुमाज । सौकृवस्तलं मिति । विवासमु
मितः फलः उत्पन्नं न भवति सत्कृत्सृवमिव
इति भावः । ५ ॥ इन्द्रीमेनेमयस्त्वं सतु स

सत्त्वं समर्तुं सुरेन्द्रं प्रजाभिः सर्वे तेषु यः
कमलुत्तमृत्यपि क्रत्वा माव्यसमेने
मयः । ६ ॥

स्वसन्दचक्रं उत्पु पुन
प्रदृश्य । सत्त्वमिति । सेन सत्त्वं सङ्गत्व
प्रजासे ममतं मभीवद्धिमितं मयः करोति
स्वभावेने मय उत्पन्नं न भवति उदृत्पत्तस्य ।
कमलुत्तमृत्यपि ततः इति कृतमाहिंत विमर्षं
कसत्केणमिवाति मत्तुनियत प्रभवद्यमित
गः । स्वाम्यमेनेमय उत्पन्नं न भवति विकारव
तु स्वदयमिति भावः ॥ ६ ॥ ६ ॥

103

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ २ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ १ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] भावत्वमिति । ७७ ॥ [illegible]
ति, [illegible]मिति । [illegible]
[illegible]ति ।
[illegible]
[illegible]पीति । [illegible]
[illegible]
[illegible] । ७३ ॥ [illegible]

[illegible] । ३
[illegible] ।
७३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible]मिति । [illegible]
[illegible]ति । [illegible]
[illegible] । [illegible]ति । [illegible]
[illegible]
[illegible] । [illegible]तीति ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ०५ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

111

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] इति ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १० ॥
[illegible]

[illegible]
१० ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ ११ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
११ ॥ ११ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 𑆩𑆲𑆼𑆯𑇀𑆮𑆫 [illegible]
[illegible] 𑆩𑆲𑆼𑆯𑇀𑆮𑆫𑆩𑆴𑆠𑆴𑇅 [illegible]
[illegible] 𑆩𑆴𑆠𑆴 [illegible]
[illegible]
[illegible] 𑆩𑆴𑆠𑆴𑇅 [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible] 𑇆 𑇑𑇓 𑇆

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] 𑇆 𑇑𑇓 𑇆 𑇑𑇓 𑇆

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

119

नेति नेतीति श्रुति[illegible]
[illegible] तु भगवन् भव [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] यति । उपनि[illegible] वादिति । उपनि[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

उपनि[illegible]
लभ्यो [illegible]
[illegible] ।। ३४ ।। ३४ ।।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] यति । [illegible]
[illegible]
[illegible] ।। ३५ ।। ३५ ।।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

१२५

[illegible] यावद् इति । यः
[illegible] पञ्चक्र-
मविवेक [illegible]
[illegible] इति [illegible] स्वयं बुद्ध एव भवति ।
[illegible] बुद्ध एव भवति बुद्ध [illegible]
[illegible] इति [illegible] ।

यावद् बुद्धत्व [illegible] बुद्ध एव भवति स्वयम् ।
बुद्धत्वेन [illegible]
[illegible] ॥ ६४ ॥ ५
इति पञ्चक्रमविवेक
[illegible]
समाप्तः ॥ ३ ॥

[illegible]

श्री. पं. स. ७३ श्री. [illegible] ॥
॥ ६४ ॥ इति पञ्चक्रमविवेकः समाप्तः ॥
॥ ३ ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ 3 ॥

[illegible]

॥ 3 ॥ 3 ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ 3 ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रसङ्गतः स्मृतिभिः स्तुतमा पुत्रि पञ्चतत्त्वं स्फु
रत्शिवत्वं पूर्वं तत्पूर्वमेव शिविष्टतं व्याप्ति
सूत्रेषु शैवं शिवमंगविद्यं पञ्चत्वं चाविज्ञेयं
सूक्ष्मे पिलमलं विकारत्वं पशिष्टतः । मेदं मद
मन्त्र । शिवतत्त्वं तत्र उष्टत तद । शिवत्वं भित्ति । भ
त्रिनं स्तम्भितं धूरकत्वं भूलपलं ऊष्मतः ।
०० ॥ शैवं रूपं तत्त्वं भूविमभित्तजम् । किंतु

तत्त्वरूपत्वं शैवं मेद भूविमशीत्रः । इति
तः सूत्रयः भूक्ष्म शिवत्वं भूलपल त्रिशूल । ००
मेतत्त्वयमणि भूतं लिङ्गं मूलद्वयः भवः ।
सिद्धय लिङ्गमेद भूतद्वयं शिवतत्त्व
॥ ०० ॥

इयेमायपद । मेतत्त्वभित्ति । चणि भूतं लिङ्गम
दकलपन पन्तत्त्वयस्तेत्वमभित्ति । यस्तत्त्वकलि
तेलिङ्गमेदेयस्तत्त्वभित्ति । लिङ्गमेदे विद्भपन
स्त्रिमतमभतद्भस्तुधंत्यत्र मपदेशिवम
त्वेन सूत्रतत्त्वतः ॥ ०० ॥ ०० ॥ ०० ॥

श्री. पं. स. ७७ स.

तत्रालीवधूक्ष्वेतमा। सूक्ष्मे किंसान्नाभिस्तेस्मस्मात्, सेतु
ति, कथंतर् धूपक्षित्वे भिस्तेस्मस्य मध्यत्रसम्बवस्मृते
डमाप्नु भूति धमकं यत्नभुक्त्राणि सोण्यन्तु धमा भृत्त
यहितु तिवन्हा मजृतः मणक्तातृ, सत्रानीति, धित
भूमतुष्ठत स्मापजहूसनेन सचलेकमध धन्नके
स्लीवडहेतः ॥ ०३ ॥ तत्रेत्रमपुकमन्नं किमतृभि
तस्मस्वतिनियेण धृक्तमस्य माण्स्तं हमिवत्तठ

मध्यत्रतत्कालेकृतं स्लीवमा। भूं धूपक्षित्वमा।
सत्रानिमपुष्टेन नकमणुस्नयहितु । ०३
मधृत्रमेकं सवात्रुषु धतुन्नं सतृजकमा। सत्र
हितयमस्मन्य मत्राणं विनियोस्नन मा। ०३।
शीहृत्सिकमस्य प्रन्डमा मेस्मीरंतघमनः, ए
स्र शुब्दोतिमधृत्मत्रात मत्राणधृतमा। ०२।

स्नयनु, शीसृत्मेतु जमतधत्र मृणकं मण्यस्मस्मिति
वत्तेनेत्रभितस्न, मधृत्रीति, पतृभितिमिधः ॥ ०३
तत्निम मधुनत्रनुकाण्यमाणवलसितृरीमृ मृत्स्मृत
स्मृण्वलमत्रं यमिस्म मधृत तस्मिनृयमानृवक्षये
सनेमयः धूलमयउक्तेनवृत्तमस्मेलधहत्रक

श्री० मु०
धं० ७७
मा०

[illegible] ॥१०८॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ०७ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ०७ ॥ ०७ ॥

[illegible]

136

[illegible]

[illegible] ॥ ३३ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३३ ॥ [illegible] ॥ ३३ ॥ [illegible] ॥ ३८ ॥

[illegible] ॥ ३३ ॥ [illegible] ॥ ३८ ॥

[illegible]

𑆃𑆱𑆳𑆤𑆵𑆮𑆳𑆠𑆶𑆑𑆷𑆑𑆳𑆓𑆮𑆱𑆤𑆃𑆳𑆢𑇅 𑆱𑆳𑆠𑆶𑆫𑆴𑆠𑆴𑇅 𑆱𑆳𑆠𑆶𑆂
𑆱𑆳𑆟𑆴𑆣𑆶𑆤𑆮𑆳𑆲𑆴𑆥𑆶𑆱𑆴𑆱𑆳𑆢𑆱𑆠𑆶𑆥𑆳𑆠𑆳 𑆥𑆷𑆱𑆳𑆠𑆶𑆱𑆤
𑆢𑆴𑆤𑆴𑆣𑆳𑆠𑆴𑆱𑆤𑆱𑆶𑆱𑆳𑆢𑆱𑆳𑆠𑆶𑆂𑆑𑆳𑆬𑆮𑆳𑆠𑆶𑆠𑆶𑆥𑆱𑆶
𑆢𑆴𑆤𑆴𑆣𑆳𑆠𑆴𑆫𑆲𑆴𑆠𑆴𑆢𑆮𑆠𑆵𑆠𑆴𑆱𑆼𑆣𑆂𑇅 𑆤𑆴𑆣𑆳𑆤𑆱𑆲𑆮𑆁𑆠
𑆱𑆤𑆁𑆯𑆼𑆪𑆁𑆣𑆳𑆫𑆴𑆱𑆶𑆥𑆱𑆠𑆴𑆥𑆷𑆥𑆫𑆴𑆠𑆴𑇅 𑆑𑆴𑆁𑆱𑆠𑆱𑆤𑆁
𑆯𑆼𑆪𑆳𑆢𑆴𑆱𑆑𑆤𑆁𑆠𑆥𑆷𑆯𑆼𑆪𑆼𑆤𑆯𑆼𑆫𑆲𑆶𑆁𑆱𑇅𑆱𑆶𑆪𑆳𑆢𑆲𑆯𑆼𑆪𑆱𑆶
𑆢𑆶𑆮𑆳𑆢𑆪𑆱𑆶𑆠𑆑𑆼𑆪𑆳𑆢𑆁𑆠𑆱𑆶𑆢𑆮𑆱𑆶𑆠𑆶𑆯𑆼𑆪𑆱𑆱𑆳𑆤𑆳𑆑

𑆱𑆳𑆠𑆱𑆤𑆳𑆢𑆴𑆤𑆴𑆣𑆳𑆠𑆴𑆥𑆴𑆪𑆠𑆮𑆁𑆯𑆼𑆪𑆱𑆠𑆴𑆠𑆠𑆳𑇅
𑆯𑆼𑆪𑆳𑆢𑆴𑆱𑆑𑆠𑆁𑆠𑆱𑆶𑆯𑆼𑆪𑆳𑆢𑆲𑆥𑆷𑆥𑆲𑆠𑆁𑆠𑇆 𑇓𑇗 𑇆
𑆱𑆲𑆼𑆮𑆁𑆮𑆴𑆣𑆼𑆪𑆱𑆠𑆼𑆠𑆶𑆣𑆲𑆴𑆱𑆳𑆱𑆪𑆟𑆵𑆯𑆼𑆪𑆼𑇅 𑆱𑆳
𑆯𑆼𑆪𑆱𑆤𑆯𑆼𑆪𑆂𑆱𑆶𑆑𑆳𑆑𑆴𑆢𑆱𑆶𑆱𑆶𑆟𑆵𑆯𑆼𑆪𑆂 𑇙𑇓 𑇆

𑆠𑆁𑆥𑆷𑆥𑆲𑆶𑆯𑆼𑆯𑆼𑆘𑆵𑆲𑆘𑆂 𑇆 𑇓𑇗 𑇆 𑆢𑆮𑆲𑆮𑆁𑆥𑆷𑆤𑆠
𑆑𑆴𑆱𑆳𑆪𑆠𑆱𑆴𑆲𑆶𑆠𑆠𑆘𑇅 𑆱𑆲𑆼𑆠𑆴𑇅 𑆠𑆠𑆱𑆳𑆱𑆪𑆣𑆳
𑆱𑆶𑆮𑆯𑆼𑆤𑆯𑆪𑆣𑆳𑆱𑆶𑆠𑆼𑆤𑆮𑆱𑆤𑆱𑆳𑆥𑆷𑆘𑆵𑆠𑆱𑆱𑆲𑆫
𑆠𑆳 𑆥𑆷𑆘𑆑𑆷𑆠𑆶𑆱𑆳𑆢𑆮𑆱𑆶𑆱𑆳𑆱𑆴𑆠𑆶𑆮𑆲𑆱𑆲𑆶𑆥𑆷𑆘
𑆑𑆶𑆫𑆳𑆢𑆮𑆱𑆴𑆲𑆶𑆠𑆲𑆘𑇅 𑆱𑆳𑆱𑆪𑆼𑆠𑆴 𑇆 𑆪𑆣
𑆱𑆳𑆱𑆼𑆪𑆱𑆤𑆯𑆼𑆪𑆂𑆠𑆣𑆳𑆟𑆵𑆯𑆼𑆪𑆂𑆱𑆳𑆑𑆴𑆢𑆱𑆶𑆠𑆠
𑆘𑆂 𑇆 𑇙𑇓 𑇆 𑇙𑇓 𑇆 𑆯𑆿𑆱𑆳𑆪𑆤𑆱𑆂 𑇆

𑆯𑆿𑇅
𑆥𑆁𑇅 𑆱𑇅
𑆓𑇅
𑆱𑇅

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३१ ॥ [illegible]

[illegible]
[illegible] ॥ ३१ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ३२ ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३३ ॥
[illegible] ॥

[illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १४ ॥

[illegible] ॥ १५ ॥

[illegible] ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ [illegible] ॥ १५ ॥

147

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नतमल्लासि संस्य शक्तिप्रसूतत्वादि कथमपश्यत्व
यविशिष्ट सत्त्वेवलं किंभवय श्रयाऽधिकय श्री
वस्तुत्वेति सङ्गतः । श्रीवत्सातिरिति । विशिष्टे
पनिवृत्तिरय श्रीवत्सजित्वेन तत्सम्यिकोऽपि
निवृत्तिरय ज्ञिशिष्टसक्तिपिहस्तुप्रसिति सूति
वस्तुमपिजाति ॥ श्लोकः ॥ २३ ॥ सूतिवस्त्री

सूत्रपाठिष्यते: समस्तसूत्रविवक्षी।

श्रीवत्सजितियं सस्तु स्वस्त व वस्तुतः।
उद्वि स्वस्य पित सुव सुनसरस्तुतः
यत्र ॥ २३ ॥ सयाऽतिसयसि चलस
नेजयेसतेयसि । उस्मिपितसा
श्रयं कसासिकिंनजीय
तु ॥ २४ ॥ ॥

सेसनं सङ्गतः । सयाऽतिसयेति । सिषयत्र स्वेन सुन
स्तुस्तुत्वेस कलयनपाज विपत्तकत्वेनाऽतीवसि
पतुयत्र कसाऽसिः सतत्तुस्तु सिहत ॥ ॥
उस्मिपितसति ॥ २४ ॥ नतवेस्तुत्तासिसंप
स्तेनस्तुत्तत्ततेः कसासिसूज स्वसिजिकोण

भाष्ये प्रयोगिक सत्त्व स्वपणे केसे धऽस्त्रम सङ्गुण ।
स्त्रमिति । स्त्रविस्त्र ठे भाषेन विणिनि धण्मे स्तुम
त्रिस्त्र स्वरू सत्त्वणो मतय पवतु भान स्तुतव यथे स्तुम
वलं स्तुमिस्तूः ॥ ५० ॥ स्तुकेसे धऽस्त्रम स्तुतम
पिस्तुव स्तुति पासन पूरं भेस्तुता मस्तुव सन भस्त्रकतेति
वस्तुदैतेति । वस्तु मस्तुत मतस्त्र मस्तुत स्तुतु पंचक्रयन

उत्तुं वस्तुपिक भामी त्रिः सेधं न स्ताङ्गमि सत्ता । य
सेस्तु सर लं डेस्त्र स्तुमस सा स्तु तिलक्ष्मिनः ॥ ५० ॥
वस्तु स्तुत मतस्तु स्तुय थे स्तु सर लं यमि । तनं त
स्तुत्य संमे वकेठे सूत्रमि स्तुमल ॥ ५० ॥
वेणस्त्र भने भई प्र धेः क्लि स्तु स्तुषाश्चन, स्तुस
धलक निसम स्तुहते वेणवकव मा ॥ ५१ ॥

नवस्तु स्तुत मतस्त्र स्तुतु विस्तु स्तुयथे स्तुमर लंयमिस्तु
उस्ति सत्तमिकस स्तुलिकमपि स्तुतधभतिस्तु नं
स्तुतत्य सं सेवनके पिविसेधः स्तुणमिस्तुः ॥ ५० ॥
स्तुवता क्लिभ नि स्तुभाषन्त सिस्त्रम स्तु सेधन्म भस्तुव
भान्, णमिति । स्तुत्तु स्तुनमय स्त्र स्तुक भदेण मि
सितु से धे स्तुवक्त्रा से स्तुमिस्तानी उभचल केनिस्त्रमपि

स्री
पं स्तु
१५
स्त्र

भदस्मुंउिल्लाभस्त्रुउन्नाभिउिठवः ॥ ५३ ॥ उद्विकिं
कउहभिहउउज । विनुराजणीउि ॥ भचेकुकुक
उक्लवंर्द्रुकुभाभिदुगाभउइनभचः एभवि
नुराजमिभर्हभकक्ष्मीः किंउकुभाभिलभ
भकूलभनेमिघजवेनभचलनेग्रवबहुह स
भ्रलेउवहज ॥ ५३ ॥ उकुणिभायभज़ कभ
मीउि । कभुः कभनाविभयाः भुणामयसमयेय

विनुराजमिउलउं भकाक्ष्मी भउ विठुवर्ना
भंचणीमिघभंहगाल्लेकुः भ्रल भुमिवउउ । ५३
कभुगामिमिघमाप्रुकुः कभाभिहगाजेउवः ।
भूमिहुभिभामाभुभउनाविहुभापीठव । ५४ ॥

धंके भ्रमीनंउकभुभयभुधंयमिघ धन्विदु
भगिमयह मयभुधंभाभ्रिरवलेकनभज्रुयधंके
पभ्रु पविमनमीनंउउवेउः उधंकभाभिह ग
केउहभूभालभाज ॥ भूमिहुउि ॥ ठवउउउः कि
भयाउभिहउउज ॥ उनाविभेउि ॥ ५५ ॥
मृीकृष्णायनमः ॥ ॥ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ५५ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ५५ [illegible] ॥ ५६ ॥ [illegible]

॥ ५७ ॥

[illegible] ॥ ५६ ॥ [illegible] ॥ ५७ ॥ ५७ ॥ ५७ ॥

153

यथाक्रान्तिविज्ञानमठ्वन्त्वेनभवभः भकाम स्तु
स्तुतिवचनं भवन्तं यमितिविनिगतिसमयं भिन्न गायं
निपत्यमितिमणीयमिद्धः ॥ ७० ॥ मतेतम सूप
तूतं विमागितेतथ धभदं तुजमिश्रूणमि भवामस्त्र
मिकलं भूत्सयितुंम, एवं तत्वाकं निक्षितमिदत
तद, भवत्याति । मधुतानित्तु कभ मिव भवस्व
भभुक्तं ठवमातेपिकः भवधत्तेन भीति निक्षितमि

विमागितभलुंमभूं मिभूम्जितुं मिथः, मं
त्याक्भवाक्षवाभातुवभूतुंमधमभा । ७०
विकिधतेकम मित्तीः कमव्ठेणमयित
धवःभमजितभधुन्तुमवाद्धभधमवता ७१

त्तः ॥ ७० ॥ एवंविचातिकथमितुयु भवतुकम
विमुयभातितदूतीकवेधय्यः कतुधवन्यभद ।
विमिधतेति । ठेणभमेनधवतुकमव्वाह्निः कम
मिश्निकिधतेमतद्विभद्धिवद्भभदस्तुतुमेवध
वाधिभभाजितधूणमिदतः ॥ ७१ ॥ भवमित
विमूधवाजितधूकविनुभष्टे धमागिक मिदद ।
विकूधति । धवमभिवेवमतु धवंणततत्तः

श्री॰
पं॰ दि॰
७७
म॰

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
५० [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible] ३ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible] ३ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]
सू॰ [illegible]
प॰ म [illegible]
३० [illegible]
५॰ [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

163

[illegible] ॥ १० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १२ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥

ननु विमर्शेन सजीव [illegible] स्थिती [illegible]
[illegible] विव [illegible]
[illegible] । [illegible] । [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible]

[illegible] ।
[illegible] । १३ ॥
[illegible] ।
[illegible] । १२ ।
[illegible] ।
[illegible] ॥ १४ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
१२ ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible] ॥ १४ ॥
[illegible]

श्री॰ पं॰ म॰ ५३ ध॰

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

168

एवं चतुर्णां क्रमेण समस्तं पूर्वं कृत्वा [illegible] समु
त्कर्षभोक्तृत्वं ज्ञानं स्वरूपं समयाति । चतुर्भुजे
ति । चक्रीभूतं चक्रीभूतं क्रमं कुर्वन् मूलप्रकृ
त्यादि सर्वं विलुप्य कालाग्निसदृशं [illegible]
भवन्नन्तरं भवितव्यं तत्त्वं ज्ञानस्वरूपं । [illegible]
ज्ञानस्वरूपं सर्वत्र निमित्तमात्रं । ज्ञानं त्रिविक
ल्पेति ॥ एवं ज्ञानस्वरूपं शिवस्वरूपं ज्ञानं [illegible]

चतुर्भुजं तत्त्वसमं यावत् [illegible] महात्मनः । ज्ञा
नं त्रिविकल्पाश्रितं ज्ञानस्वरूपं ॥
३३ ॥ ज्ञानं कालाग्निवह्नि [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] संसारं [illegible]
॥ ३ ॥ ३३ ॥

[illegible]

कालाग्निवह्नि

[illegible] स्वरूपं समयाति ज्ञानस्वरूपं ति । [illegible]
[illegible] निमित्तमात्रं । [illegible] । ज्ञा
[illegible] शिवकालानल [illegible]
विकल्पः ज्ञानस्वरूपं संसारं [illegible] त्रिविकल्पं
[illegible] । संसारेति ॥ ३३ ॥

169

[illegible]

[illegible] ॥ ३१ ॥

[illegible] ३३ ॥

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३४ ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible] ३४
[illegible]
[illegible] ॥ ३५ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ३६ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ ३७ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ३७ ॥

[illegible] ॥ ३७ ॥ ३७ ॥ ३७ ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥

[illegible]

उल्लेख इति। तल्लितम्भाज। अतः सुखमिति। ८३॥
नन्वप्येष्विह स्वतन्त्रेष्वपि स्वयं मनःसु भूयेण मनन
स्वयं सुखतया कृत्वा न यत्न इति भक्तं। यत्नेति।
यत्नेभिः स्वपि सुखं नातु यल सुखी सन्तत्त्वभक्त
स्वपि स्वयं मन भूयेणैव विन सुख इह ज। अतः सुखमि
ति ॥ ८४ ॥ नन्वप्येष्विह सुख सन्तत्त्वभक्तिम

यत्नः स्वयं न यत्नात्तु तत्वं सुखं यत्नेभि सु।
स्वतन्त्र सुखं सुखं सन्तत्त्व भाक्त भक्ततः। ८५
सन्तत्त्व सन्तत्त्व ति भक्त सुखं सुख तत्त्वादि। किं
सुखं सुतत्त्व भक्तैव विमुक्त सुखतां भा॥ ८५
यथा सन्तत्त्व सुख भः सुखं सुख त्रिकल्पितः
सन्तत्त्वे यत्नेभिस्तु यथा तत्त्वैकल्पितः। ८६॥

तत्र सन्तत्त्वविकल्पेनैव निर्विशिष्ट इति कः सुखमि ह सन्त सन्त
न सन्तत्त्वविकल्पसुखमिति भक्त सुख भक्तलक्षण
लक्षण सुखविमिति परिज्ञाति। सन्तत्त्व भक्तेति ८५ ॥
नन्वेतत् सन्तत्त्वविकल्प सुखमिति भक्त सुख। भक्त
युक्त सुख यत्न सन्तत्त्वे सुख भक्त सुखयत्न सन्निधौ
यत्नः सुखमिह सन्त सन्तत्त्व सन्तत्त्वविकल्प इति।

177

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

178

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ५१ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ५३ ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible] ॥ ५१
[illegible]
[illegible]
५३ ॥ [illegible]
[illegible]
५७ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ६० ॥

[illegible]
[illegible] ॥ ५७ ॥ [illegible]
श्री. [illegible]
पं. ग्र. [illegible]
७० [illegible]
प. [illegible] ॥ ६० ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ७४ ॥
[illegible]

[illegible] ॥ ७५ ॥
[illegible] ॥ ७६ ॥
[illegible] ॥ ७७ ॥

[illegible] ॥ ७८ ॥
[illegible] ॥ ७७ ॥ ७७ ॥

107

स्वभावश्च भूत्ये विभूति पत्रं भवन्त्युत्सृति भाल विमोक्षि
व मिव विभूतिपत्रं भवयति, भवानिति ॥ २३ ॥ पुष्प
द्रवामिन पुष्प भवयति, भवानिति, भवस्तु तिमिरं
कुसुम प्रसूति, सुपथ मध्याति, देवगुरु त्वि । नानीति
त्विमि धर्म अनन्तीश भवतु देवगुरु भत्तरिल नयस्तुत

भवमज स्वहृदि भेव देव वंशाश्यपि वामिनः । वरुण
विवस्तोर्विभूति भूतिमभमस्तु यात ॥ २३ ॥
भुवंवमन्त्रु तरल पुष्प श्रीमत्तः । देवगुः
मधुवत्तन व उद्घृष्टमत्तृयम ॥ २७ ॥
भूलिंगलीयानि धेनु कुमुदपुष्पदंगं हिति, भव
पुष्पकः सूत्रयः मतमेव भवभूमः ॥ ३० ॥
बाल पुष्पमतन्नं मतं कल्पितभुमः, कली
क्लीवः भविष्यस्तिमत् भवात्मस्तिः ॥ ३० ॥

तिभूयः ॥ २७ ॥ भवस्तु किं भवाल भिन्नस्तु स्पृष्ट ।
भूलिंगति, भूलिंगलीयामहते भजीयानि धेनु कुमुम
कामदेव स्पृहः कुमुद पुष्प देहि मित्त विभूतय,
अग्रजः ॥ ३० ॥ हृत्तरभवमनाति । वालानू
ति ॥ ३० ॥ ३० ॥ ॥

श्री०
पं० भ०
तप
वं०

1858

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ ३३ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑆤𑆱𑇀𑆠𑇀𑆮𑆼𑆨𑆴𑆫𑇀𑆮𑆴𑆢𑆴𑆠𑆨𑆮𑆠𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆠𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆨𑆮 𑆇𑆠𑇀𑆠𑆫𑆾𑇁𑆲𑆁 𑆠𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆨𑆮
𑆱𑆷𑆠𑇀𑆫 𑆨𑆑𑇀𑆠𑆴𑆨𑆴𑆫𑇀𑆤𑆵𑆨𑆴𑆱𑇀𑆠𑆶 𑆮𑆴𑆨𑆳𑆮𑆠𑆂𑇅 𑆣𑆸𑆠𑆴𑆩𑆠𑇀𑆠𑆶𑆠𑆂
𑆥𑇀𑆫𑆮𑆼𑆯 𑆮𑆴𑆫𑆾𑆣𑆾𑇁𑆲𑆁 𑆨𑆑𑇀𑆠𑆂𑇅 𑆱𑇀𑆮𑆠𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆨𑆪𑆠𑆴𑇅 𑆱𑆢𑇀𑆨𑆳𑆮
𑆨𑆱𑇀𑆠𑆶 𑆩𑆴𑆡𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆠𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆨𑆪𑆂 𑆑𑆼𑆩𑆂 𑆥𑆫𑆴𑆩𑆴𑆯𑇀𑆫𑆶𑆠𑆼 𑆨𑆮𑆠𑇀𑆑𑆼𑆩𑆂
𑆩𑆸𑆠𑇀𑆮𑆼 𑆮𑆥𑆶𑆑𑇀𑆫𑆩𑆼 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆁 𑆪𑆠𑇀𑆑𑆳𑆩𑆵𑆤𑆳𑆨𑆑𑇀𑆰
𑆱𑆠𑇀𑆱𑇀𑆩𑆸𑆠𑆴𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆮𑆼𑆯𑆳𑆠𑇀𑆠𑆶𑆤𑆳𑆩𑆪𑆼𑆠𑇁𑆲𑆩𑇀𑆂 𑇆𑇗𑇘𑇆

𑆱𑇀𑆮𑆠𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆨𑆪𑆑𑆼𑆩𑆼𑆪𑆂 𑆱𑆶𑆥𑆶𑆰𑇀𑆥𑆼 𑆥𑆫𑆴𑆩𑆴𑆯𑇀𑆫𑆶𑆠𑆼𑇅 𑆱𑆩𑇀𑆨𑆮
𑆩𑆴𑆡𑆶 𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆁 𑆨𑆮𑆠𑇀𑆑𑆼𑆩𑆼 𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠𑆼 𑇆𑇗𑇘𑇆
𑆥𑆶𑆫𑆁 𑆩𑆼𑆠𑆮 𑆱𑆠𑇀𑆠𑆶 𑆱𑆷𑆫𑇀𑆪𑆮𑆼𑆟𑆱𑇀𑆠𑆶𑆥𑆠
𑆩𑆳𑇅 𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠𑇀𑆮𑆽𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆠𑆂 𑆩𑆴𑇁
𑆠𑆶𑆩𑇀𑆨𑆾𑆘𑆴𑆠 𑆨𑆳𑆠𑆂 𑇆𑇗𑇙𑇆

𑆱𑆠𑇀𑆮𑆼𑆮𑆱𑇀𑆮𑆫𑆱𑇀𑆩𑆴𑆩𑆴𑆱𑇀𑆩𑆶 𑆥𑆢𑆁 𑆠𑆶𑆥𑆮𑆤𑆪𑆠𑆵𑆲𑆢𑇅 𑆱𑆠
𑆩𑆴𑆠𑆴𑇅 𑆠𑆶 𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠𑇀𑆮𑆤𑆶𑆫𑆠 𑆨𑆳𑆢 𑆱𑆼𑆠𑆮 𑆨𑆢𑇀𑆢𑆷𑆱𑆷𑆠𑆳𑆘𑆴𑆲𑆫
𑆥𑆮𑆟𑆱𑇀𑆠𑆶𑆥𑆠𑆁 𑆩𑆴𑆑𑇀𑆰𑆠𑆼𑆪𑆳𑆑𑇀𑆰𑆑𑆠𑆁 𑆮𑆤𑆪𑆠𑆴𑇅 𑆩𑆼𑆠𑆼
𑆱𑆷𑆪𑆁 𑆑𑆫𑆬𑆩𑆳𑆢𑇅 𑆩𑆴𑆢𑆶𑆥𑆠𑆴𑇅 𑆥𑆘𑆴𑆠𑆨𑆳𑆠𑆼𑆩𑆴𑇁
𑆱𑆷𑆫𑆮𑆠𑆵𑆠𑆴𑆪𑆼𑆩𑆤 𑆱𑆮𑆥𑆼𑆤𑆳𑆘𑆴𑆠𑆱𑆶𑆤𑆳𑆪𑆥𑆤𑆁𑆱𑆶
𑆠𑆶𑆥𑇀𑆫𑆼 𑆱𑆮𑆥𑆩𑆼𑆠𑆮𑆱𑆼 𑆱𑆷𑆫𑆮𑆠𑆵𑆲𑆩𑇀𑆂 𑇆𑇗𑇙𑇆

193

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

197

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

198

𑆑𑆶𑆩𑇀𑆨𑆑𑆱 𑆓𑆮𑆳𑆤𑆳𑆩𑆵𑆮𑆱𑇀𑆠𑆾𑆢𑆼। 𑆊𑆁𑆓𑆱𑇀𑆑𑆴 𑆥𑆵𑆠𑆴। ०३ ॥
𑆑𑆼𑆮𑆭𑆊𑆁𑆓𑆱𑆩𑆵𑆫𑆴𑆱𑇀𑆛 𑆩𑆶𑆭𑆱𑆩𑆵𑆫𑆴𑆁 𑆮𑆴𑆢𑆪𑆳𑆤𑇀 𑆥𑆭𑆴𑆱𑇀
𑆤𑆛𑆶 𑆩𑆶𑆭𑆱𑆩𑆵𑆫𑆴 𑆩𑆫𑆴𑆱 𑆠𑆴𑆩𑆤𑆵𑆮𑆴𑆫 𑆝𑆾𑆁𑆱𑇀𑆮𑆳𑆱𑇀𑆠𑆾𑆢
𑆩𑆶𑆭𑆱 𑆢𑆼𑆁𑆢𑆴𑆤𑆼𑆠𑆴 ॥ ०३ ॥ 𑆪𑆶𑆛𑆶𑆮𑆼 𑆩𑆶𑆁 𑆩𑆳𑆭𑆥𑆳
𑆢। 𑆩𑆢𑆩𑆶𑆤𑆵𑆱𑆪𑆠𑆴। 𑆱𑆶𑆠𑆁𑆮𑆳𑆑𑆳𑆩𑆴𑆠𑆩𑆥𑆳𑇂 𑆮𑆴𑆱𑇀𑆮

𑆩𑆶𑆭𑆱𑆩𑆼𑆢𑆶 𑆮𑆴𑆤𑆳 𑆊𑆁𑆓𑆱 𑆩𑆼𑆢𑆼𑆤𑆑𑆶𑆥𑆴 𑆩𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠। 𑆮𑆾
𑆩𑆶𑆢𑆼𑆁𑆩𑆼𑆠𑇂 𑆩𑆮𑆶𑆠𑆼 𑆩𑆱𑇀𑆑𑆳𑆩𑆴 𑆩𑆳𑆤𑆳 ॥ ०३ ॥
𑆩𑆢𑆩𑆶𑆤𑆵𑆱𑆪𑆼𑆢𑆴𑆱𑇀𑆠𑆠𑆱𑇀𑆩𑆳𑆴𑆪𑆴। 𑆱𑆶𑆠𑆩𑆴
𑆱𑆶𑆓𑆤𑆴𑆱 𑆮𑆴𑆱𑇀𑆠𑆶𑆪𑆩𑆴𑆠𑆑𑇂 ॥ ०४ ॥
𑆩𑆮𑆠𑇂 𑆥𑆳𑆊𑆴𑆥𑆩𑆶𑆢𑆴 𑆱𑆼𑆥𑆴 𑆩𑆩𑆠। 𑆠𑆠𑆶
𑆠𑆶𑆥𑆩𑆢𑆱𑇀𑆮𑆼𑆩𑆼𑆤𑆼𑆠𑇂 𑆥𑆩𑆳𑆤𑆳 ॥ ०५ ॥ 𑆥
𑆱𑆶𑆠𑆁 𑆩𑆶𑆥 𑆩𑆵𑆤𑆳𑆱𑇀𑆮𑆩𑆶𑆱𑇂। 𑆩𑆶𑆱𑆥𑆠𑆴𑇂। 𑆩𑆶𑆱
𑆩𑆳𑆤𑆠𑆶𑆢𑆩𑆴 𑆱𑆶𑆠𑆴 𑆩𑆼𑆩𑆢𑆳𑆠𑆴 ॥ ०६ ॥

𑆩𑆶𑆱𑆩𑆴𑆠𑆶𑆑𑇂 𑆢𑆴𑆤 𑆱𑆶𑆥𑆳𑆩𑆑𑇂 ॥ ०४ ॥ 𑆩𑆶𑆱𑆴𑆩𑆴 ॥
𑆥𑆳𑆱𑆶 𑆩𑆮𑆠𑆤𑇀𑆠𑆩𑆭𑆼𑆱𑆠𑆶𑆢। 𑆩𑆮𑆠𑆱𑆠𑆴 ॥ ०५
𑆥𑆼𑆁𑆑𑆤𑆱𑆶𑆠𑆶𑆢। 𑆩𑆱𑆩𑆴𑆠𑆴। 𑆩𑆶𑆱𑆥𑆠𑆴𑇂
𑆩𑆶𑆱𑆩𑆳𑆤𑆠𑆶𑆢𑆩𑆴 𑆮𑆳𑆁 𑆩𑆶𑆩𑆭 𑆩𑆴𑆠𑆢 ।
𑆩𑆶𑆱𑆥𑆠𑆴𑆠𑆴 ॥ ०६ ॥ ०६ ॥ ०६ ॥

199

[illegible] विष्णुरिति ॥ ०१ ॥ [illegible]
[illegible] शिवश्चेति ॥ ०२ ॥ [illegible]
ति ॥ ०३ ॥ [illegible]
[illegible]

विष्णुः श्रेष्ठः [illegible] कमल [illegible] । वि
ष्णु [illegible] ॥ ०१ ॥
शिवश्च [illegible] शिवः ।
[illegible] विष्णु [illegible] ॥ ०२ ॥
[illegible] । वि
[illegible] ॥ ०३ ॥
[illegible] । [illegible]
[illegible] ॥ ३० ॥
[illegible] शिवः । [illegible]
[illegible] ॥ ४० ॥

[illegible] । [illegible]
[illegible] ॥ ३० ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible] ॥ ४० ॥

श्री·
प· स·
०··
प·

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ३१ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ३३ ॥

[illegible] ॥ ३७ ॥

[illegible] ॥ ३३ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३२ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३३ ॥ [illegible]

[illegible]
[illegible] ॥ ३२ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ३३ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ३४ ॥
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible] ॥ ३४ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆱𑆼𑆮𑆳𑆑𑆩𑆼𑆠𑆴𑇅 𑆇𑆖𑆴𑆠𑆠𑆩𑆶𑆢𑇀𑆢𑆴𑆯𑇀𑆪𑆽𑆠𑆢𑇀𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠𑆩𑇀𑇅 𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆩𑆵𑆪
𑆠𑆩𑆴𑆠𑆴 𑇆 𑇕𑇓 𑇆 𑆤𑆠𑆩𑆼𑆮𑆁𑆱𑆼𑆮𑆑𑆱𑇀𑆪 𑆱𑆶𑆑𑆩𑆱𑇀𑆠𑆴
𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆠𑆶𑆥𑆴𑆱𑇀𑆠𑆵𑆪𑆱𑇀𑆪 𑆱𑆼𑆮𑆑𑆱𑇀𑆪 𑆱𑆶𑆑𑆩𑆱𑇀𑆠𑆴
𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆠𑆂𑇅 𑆱𑆠𑇀𑆮𑆼𑆱𑆼𑆮𑆳𑆑𑆩𑆤𑇀𑆩𑆤𑆱𑆼𑆮𑆳𑆠𑇀𑆠𑆼𑆠𑆠
𑆱𑆮𑆴𑆤𑆱𑇀𑆪𑆠𑆼𑆤𑆮𑆑𑆁𑆤𑆠𑆩𑆼𑆮𑆢𑆪𑆠𑇀𑆱𑆩𑆱𑇀𑆠𑆶
𑆥𑆴𑆠𑆱𑆮𑆴𑆤𑆱𑇀𑆪𑆠𑆱𑆼𑆮𑆤𑆤𑆪𑆢𑇅 𑆱𑆠𑆩𑆩𑆴𑆠𑆴𑇅
𑆩𑆴𑆯𑇀𑆠𑆩𑆮𑆴𑆩𑆶𑆠𑆱𑆼𑆮𑆱𑇀𑆠𑆁𑆢𑆴𑆯𑇀𑆪𑆼𑆥𑆬𑆥𑆮𑆴𑆬𑆩

𑆱𑆼𑆮𑆳𑆑𑆩𑆮𑆱𑆩𑆢𑆶𑆩𑆴𑆯𑇀𑆠𑆱𑆼𑆠𑇀𑆮𑆩𑆵𑆪𑆠𑆁 𑇆𑇕𑇓
𑆱𑆠𑆩𑆩𑆼𑆮𑆠𑆵𑆤𑆁𑆥𑆵𑆠𑆶𑆥𑆬𑆱𑆶𑆤𑆠𑆴𑇅 𑆱𑆠𑆮𑆶
𑆩𑆴𑆯𑇀𑆠𑆱𑆼𑆮𑆴𑆩𑆢𑆁𑆱𑆠𑆴𑆠𑆩𑆶 𑇆 𑇕𑇔 𑇆 𑆱𑆳𑆪
𑆠𑆩𑆤𑆱𑆵𑆮𑆼𑆱𑆼𑆑𑆼𑆯𑆵𑆠𑆴𑆱𑆶𑆠𑆱𑆶𑆠𑆩𑆵𑇅 𑆱𑆼𑆮𑆳
𑆑𑆩𑆱𑆬𑆑𑆩𑆳𑆮𑆴𑆮𑆠𑆼 𑆮𑆠𑇀𑆮𑆮𑆴𑆢𑆼 𑇆 𑇕𑇕 𑇆

𑆱𑆁𑆮𑆴𑆩𑆢𑆶𑆩𑆴𑆯𑇀𑆠𑆩𑆮𑆱𑆮𑆠𑆵𑆠𑆴𑆠𑆮𑆂𑇅 𑆪𑆼𑆮𑆁𑆱𑆼𑆩
𑆤𑆩𑆤𑆩𑆠𑇀𑆫𑆩𑆴𑆠𑆁𑆠𑆮𑆠𑆴𑇅 𑆮𑆴𑆩𑆠𑆯𑇀𑆢𑆴𑆮𑆩𑆤𑆯𑇀𑆫𑆴𑆢𑆶𑆠𑆴𑆮𑆴
𑆯𑆮𑆢𑆼𑆠𑆮𑆴𑆠𑆩𑆢𑆠𑆴𑇅 𑆮𑆱𑇀𑆠𑆮𑆱𑆶𑆮𑆴𑆩𑆮𑆠𑇀𑆠𑇅 𑆯𑆢𑆶𑆮𑆠𑆴
𑆮𑆴𑆠𑆴 𑇆 𑇕𑇔 𑇆 𑆪𑆼𑆮𑆁𑆱𑆵𑆮𑆱𑆶𑆪𑆱𑆪𑆴𑆑𑆁𑆱𑆶𑆠𑆁
𑆯𑆥𑆥𑆤𑆴𑆠𑆯𑆥𑆁𑆤𑆠𑆴𑇅 𑆱𑆳𑆪𑆠𑆱𑆤𑆼𑆠𑆴𑇅 𑆤𑆠𑆱𑆵𑆮
𑆩𑆪𑆼𑆢𑆪𑆴𑆠𑆶𑆩𑆤𑆼𑆑𑆯𑆩𑆮𑆠𑆠𑆼𑆩𑆩𑆴𑆢𑆴𑆯𑇀𑆪𑆩
𑆱𑇀𑆠𑆢𑆶𑆩𑆢𑆶𑆥𑆠𑆴𑆩𑆼𑆤𑆱𑆼𑆮𑆳𑆑𑆩𑆱𑆬𑆑𑆩𑆪𑆼

𑆯𑇀𑆫𑆵.
𑆥𑆁. 𑆢.
𑇐.𑇕
𑇕.

[illegible]

𑆱𑆼𑆮𑇀𑆪𑆳𑆑𑆫𑇀𑆩𑆼𑆠𑆴𑇅 𑆇𑆖𑆴𑆠𑆠𑇀𑆮𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆴𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆠𑇀𑆮𑆳𑆠𑇀𑇅 𑆱𑆠𑇀𑆮𑆩𑆵𑆪
𑆠𑇀𑆮𑆩𑆴𑆠𑆴 𑇆 𑇕𑇓 𑇆 𑆤𑆤𑆶𑆱𑆼𑆮𑇀𑆪𑆁𑆱𑆼𑆮𑆑𑆠𑇀𑆮𑆁 𑆱𑆼𑆮𑇀𑆪𑆑𑆫𑇀𑆩𑆱𑇀𑆩𑆸𑆠𑆴
𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆮𑆱𑇀𑆠𑆶𑆮𑆴𑆱𑇀𑆠𑆸𑆠𑆵𑆪𑆱𑇀𑆪 𑆱𑆼𑆮𑇀𑆪𑆑𑆫𑇀𑆩𑆱𑇀𑆩𑆸𑆠𑆴𑆑𑆫𑇀𑆩𑆱𑇀𑆩𑆸𑆠𑆴
𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆮𑆠𑆂𑇅 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆼𑆮𑇀𑆪𑆑𑇀𑆠𑆩𑆤𑆾𑆩𑆤𑆱𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆳𑆠𑇀𑆠𑆠𑇀𑆮
𑆔𑆛𑆮𑆴𑆰𑆪𑆱𑇀𑆩𑆸𑆠𑆼𑆫𑆮𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠𑇀𑆮𑆁 𑆱𑆠𑇀𑆮𑆩𑆼𑆮 𑆢𑆸𑆰𑇀𑆛𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆁
𑆥𑆴𑆠𑆱𑇀𑆪 𑆮𑆴𑆰𑆪𑆱𑇀𑆩𑆸𑆠𑆼𑆂 𑆱𑆼𑆮𑇀𑆪𑆠𑇀𑆮𑆳𑆢𑆤𑆳𑆪𑆠𑇀𑆠𑇅 𑆱𑆠𑇀𑆮𑆩𑆴𑆠𑆴𑇅
𑆩𑆴𑆩𑆠𑇀𑆮𑆩𑆮𑆴𑆰𑆩𑆠𑇀𑆮𑆁 𑆱𑆠𑇀𑆮𑆁 𑆱𑆶𑆤𑇀𑆢𑆫𑆁 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆶𑆥𑆬𑆥𑆮𑆴𑆬𑆩𑇀𑆧

𑆱𑆼𑆮𑇀𑆪𑆑𑆫𑇀𑆩𑆮𑆠𑇀𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆁 𑆩𑆴𑆩𑆠𑇀𑆮𑆩𑆼𑆮𑆩𑆵𑆪𑆱𑆼 𑇆𑇕𑇓
𑆱𑆠𑇀𑆮𑆩𑆼𑆮𑆠𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆵𑆩𑆳𑆤𑆴𑆤𑆵𑆠𑇀𑆪𑆶𑆥𑆬𑆧𑇀𑆣𑆼𑆫𑇀𑆘𑆳𑆪𑆠𑆼𑇅 𑆔𑆛𑆠𑇀𑆮𑆁 𑆲𑆴
𑆩𑆴𑆠𑇀𑆮𑆩𑆼𑆮𑆴𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆁 𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠𑆱𑇀𑆪 𑇆 𑇕𑇔 𑇆 𑆱𑆠𑇀𑆪
𑆠𑇀𑆮𑆩𑆤𑆤𑇀𑆪𑆮𑆴𑆰𑆪𑆼𑆑𑆫𑇀𑆠𑇀𑆫𑆵𑆠𑆴𑆱𑇀𑆩𑆸𑆠𑆼𑆫𑆱𑆠𑇀𑆮𑆩𑇀𑇅 𑆱𑆼𑆮𑇀𑆪
𑆑𑆫𑇀𑆩𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆑𑆫𑇀𑆩𑆳𑆥𑆴 𑆮𑆱𑇀𑆠𑆶 𑆱𑆠𑇀𑆮𑆩𑆴𑆠𑆴 𑇆 𑇕𑇕 𑇆

𑆱𑆫𑇀𑆮𑆮𑆴𑆰𑆪𑆁 𑆩𑆴𑆩𑆠𑇀𑆮𑆩𑆮𑆱𑇀𑆠𑆶𑆮𑆱𑇀𑆠𑆵𑆠𑆴𑆠𑇀𑆮𑆠𑆂𑇅 𑆍𑆮𑆁 𑆱𑆠𑇀𑆪
𑆤𑆩𑆤 𑆱𑆠𑇀𑆮𑆩𑆴𑆠𑆠𑇀𑆮𑆳𑆠𑆴𑇅 𑆮𑆴𑆱𑆠𑇀𑆮𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆴𑆮𑆱𑆤𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠𑆴𑆲𑆼𑆠𑆶𑆮𑆴
𑆰𑆪𑆠𑇀𑆮𑆼𑆤𑆮𑆴𑆠𑆱𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅 𑆠𑆠𑇀𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆮𑆴𑆰𑆪𑆠𑇀𑆮𑆁 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆮𑆠𑆴
𑆮𑆩𑆴𑆠𑆴 𑇆 𑇕𑇖 𑇆 𑆍𑆮𑆁 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆮𑆴𑆰𑆪𑆱𑇀𑆪 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆮𑆴𑆰𑆪𑆑𑆠𑇀𑆮𑆁 𑆱𑆠𑇀𑆮
𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆳𑆥𑆠𑇀𑆠𑆴𑆫𑆷𑆥𑆱𑆁𑆓𑆠𑆳𑆠𑆴𑇅 𑆱𑆠𑇀𑆪𑆠𑇀𑆮𑆩𑆤𑆳𑆠𑆴𑇅 𑆤𑆤𑆶 𑆱𑆫𑇀𑆮
𑆩𑆪𑆼𑆰𑇀𑆮𑆥𑆴 𑆱𑇀𑆮𑆱𑆩𑆳𑆤𑆑𑆱𑇀𑆪 𑆨𑆮𑆠𑆂 𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆴𑆫𑆴𑆠𑇀𑆪𑆱
𑆱𑇀𑆩𑆠𑇀𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆁 𑆥𑆑𑇀𑆰𑆴𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆁 𑆱𑆼𑆮𑇀𑆪𑆑𑆫𑇀𑆩𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆑𑆫𑇀𑆩𑆪𑆼

𑆯𑇀𑆫𑆵॰
𑆥𑆁॰ 𑆑॰
𑇐.𑇕
𑇕॰

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

218

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ … ॥
[illegible]
[illegible] ॥ … ॥

[illegible]
[illegible] ॥ … ॥
[illegible]
[illegible] ॥ … ॥
[illegible]
[illegible] ॥ … ॥
[illegible]
[illegible] ॥ … ॥

[illegible]
[illegible] ॥ … ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]